मध्यांचल दर्पण

(अंक - 17)

छमाही पत्रिका का प्रथम अंक

अप्रैल - सितम्बर 2020

1898 से राष्ट्र की सेवा में

कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, मध्यांचल, आगरा

दिनांक 14 सितम्बर 2020 को हिंदी दिवस
के अवसर पर
भारत के माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी
द्वारा राष्ट्र के नाम दिया गया संदेश

अमित शाह
गृह मंत्री
भारत
AMIT SHAH
HOME MINISTER
INDIA

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिन के शुभ अवसर पर, मैं सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं देना चाहता हूं।

पूरी दुनिया में हमारा देश, एक अलग प्रकार का देश है। कई प्रकार की संस्कृतियां, कई प्रकार की कलाएं और कई प्रकार की भाषाओं का मेलजोल यहां पर दिखाई पड़ता है। यह हमारी बहुत बड़ी ताकत है। हम सभी दृष्टि से एक संपन्न राष्ट्र हैं। अनेक भाषाएं एवं संस्कृतियां हमारी न केवल विरासत हैं, हमारी ताकत भी हैं, इसलिए हमें इसको आगे बढ़ाना है। सांस्कृतिक व भाषाई विविधता से भरे, इस गौरवशाली देश में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण के बीच, सदियों से, कई भाषाओं ने संपर्क बनाए रखने का काम किया है। हिंदी इसमें प्रमुख भाषा रही है और ये योगदान जो हिंदी का है इसको देश के कई नेताओं ने समय-समय पर सराहा है और हिंदी ने भारत को एकता के सूत्र में पिरोने का काम किया है। हिंदी भाषा और बाकी सारी भारतीय भाषाओं ने मिलकर भारत की सांस्कृतिक विविधता को आगे ले जाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है। हिंदी के साथ बृज, बुंदेलखंडी, अवधी, भोजपुरी, अन्य भाषाएं और बोलियां इसका उदाहरण हैं। हिंदी हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम के समय से राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का प्रभावी व शक्तिशाली माध्यम रही है। हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति इसकी वैज्ञानिकता, मौलिकता, सरलता, सुबोधता और स्वीकार्यता भी है। हिंदी भाषा की विशेषता है कि इसमें जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है। हिंदी की इन विशेषताओं एवं सर्वग्राह्यता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया।

भारतीय सभ्यता, संस्कृति और संस्कारों की अविरल धारा, मुख्य रूप से हिंदी भाषा से ही जीवन्त तथा सुरक्षित रह पाई है। हिंदी भाषा ने, बाकी स्थानीय भाषाओं को भी,बल देने का प्रयास किया है। हर राज्य की भाषा को,हिंदी ताकत देती है। हिंदी की प्रतिस्पर्धा कभी भी स्थानीय भाषा से नहीं रही, यह पूरे भारत के जनमानस में ज्यादा स्पष्ट होने की जरूरत है। 26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' व लिपि 'देवनागरी' होगी। अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं का प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए, जहां आवश्यक है या वांछनीय हो, वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से, और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए, हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है।

संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करने के लिए आवश्यक है कि सरकारी कामकाज अनुवाद की अपेक्षा मूल रूप से हिंदी में किया जाए और अन्य स्थानीय भाषाओं में इसका अनुवाद किया जाए। भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/उपक्रमों तथा बैंकों इत्यादि के कार्यालय प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से मेरा विनम्र आग्रह है कि स्थानीय भाषाओं के साथ-साथ वे सरकारी कामकाज में, मूल रूप से हिंदी का प्रयोग करें ताकि कार्यालय के अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों को भी अपना कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा मिले।

माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में आज भारत एक संसाधन-संपन्न शक्तिशाली देश के रूप में उभर रहा है और इसमें देश की समृद्ध भाषा हिंदी का बहुत बड़ा योगदान है। वैश्विक मंचों पर प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में दिए गए भाषणों से, हिंदी का वैश्विक कद मजबूत हुआ है और हिंदी प्रेमियों को प्रेरणा भी मिल रही है। इससे देश की युवा पीढ़ी भाषा के साथ जुड़ने की ओर अग्रसर हुई है। बस, आवश्यकता इस बात की है कि आगामी पीढ़ी को अधिक से अधिक सूचनाएं हिंदी में उपलब्ध कराई जाएं और उनमें ऐसे संस्कार विकसित किए जाएं कि वह मूल रूप से हिंदी भाषा में काम करें।

वर्तमान समय में कोई भी भाषा सूचना प्रौद्योगिकी के बिना पल्लवित और पोषित नहीं हो सकती। राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी का और अधिक प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध है और इस दिशा में निरंतर कार्य कर रहा है। प्रधानमंत्री जी के 'आत्मनिर्भर भारत' के अभियान को आगे बढ़ाते हुए, राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी के लिए ई-टूल्स सुदृढ़ करने का काम किया जा रहा है। 'वोकल फॉर लोकल' के अंतर्गत किए जा रहे कार्यों में विभाग द्वारा निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' का विस्तार किया जा रहा है जिससे अनुवाद के क्षेत्र में समय की बचत करने के साथ-साथ एकरूपता और उत्कृष्टता भी सुनिश्चित की जा सके। इसके अतिरिक्त लीला हिंदी प्रवाह, ई-महाशब्दकोश मोबाइल एप्लीकेशन भी हिंदी प्रेमियों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। राजभाषा विभाग द्वारा ई-सरल हिंदी वाक्यकोश का विकास किया जा रहा है।

राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में, हिंदी गृह-पत्रिकाओं का विशेष महत्व है। राजभाषा विभाग द्वारा बनाए गए ई-पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिंदी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित होने वाली ई-पत्रिकाओं से लाभान्वित हो पाएंगे। आज हिंदी दिवस के मौके पर मेरा यह कहना है कि सभी मंत्रालय सरकारी कामकाज में इन ई-टूल्स का अधिक से अधिक प्रयोग सुनिश्चित करें।

विगत कई माह से पूरी दुनिया अत्यंत विषम परिस्थिति से गुज़र रही है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत कोरोना महामारी से लड़ने में सफल रहा और इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों के साथ प्रत्यक्ष नागरिकों ने भी सहयोग किया है। समय-समय पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित कर देश की जनता को कोरोना महामारी से लड़ने के लिए संबल प्रदान किया। कोरोना महामारी से उत्पन्न अप्रत्याशित संकट की स्थिति के कारण, जनहित को प्राथमिकता देते हुए इस वर्ष 'हिंदी दिन समारोह' का आयोजन नहीं किया जा रहा है लेकिन जिन मंत्रालयों, विभागों, संस्थाओं, बैंकों, सरकारी उपक्रमों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों ने पूरे वर्ष पूरी निष्ठा से हिंदी में श्रेष्ठ कार्य किया है और प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति पुरस्कार जीते हैं, उन्हें मैं अपनी ओर से बहुत-बहुत बधाई देता हूं। इसके साथ-साथ हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन और पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लिए प्रदान किए जाने वाले राजभाषा गौरव पुरस्कार विजेता भी बधाई के पात्र हैं ही। मैं आशा करता हूं कि आप सभी पुरस्कार विजेता यहीं से थकेंगे नहीं, भविष्य में, हिंदी के लिए कार्य करने के लिए, उच्च और अनुकरणीय मानदंड प्रस्थापित करते रहेंगे। वे प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा थी कि देश इस आपदा को अवसर में परिवर्तित करे। राजभाषा विभाग ने भी इस अवसर का सकारात्मक उपयोग करते हुए सूचना तकनीक का सहारा लिया और पहली बार वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग जैसे ऑनलाइन माध्यमों के जरिए, बड़ी संख्या में, ई-निरीक्षण एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया। राजभाषा विभाग के प्रशिक्षण केंद्र, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा पहली बार ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन शुरू किया गया जिसमें परंपरागत क्लासरूम टीचिंग को परिवर्तित कर, ऑनलाइन वेब कॉन्फ्रेंसिंग टूल के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन करें, तत्परता के साथ अनुपालन करें। हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अधिकारियों/कर्मचारियों से राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आमजन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ, निर्बाध रूप से उठा पाए।

आइए! हिंदी दिवस के इस अवसर पर हम प्रतिज्ञा लें कि हिंदी की उन्नति व प्रगति की यात्रा पूरे समर्पण के साथ हम आगे बढ़ाते हुए, हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी को सभी स्थानीय भाषाओं के साथ में रखते हुए, हिंदी के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करेंगे। इस मौके पर, मैं देश के युवाओं को भी कहना चाहता हूं कि जब स्थानीय भाषा में बोलने वाला साथी हो तब और कोई भाषा का प्रयोग न करते हुए भारतीय भाषाओं के प्रयोग का आग्रह रखिए। मैं अभिभावकों को भी कहना चाहता हूं,- अपने बच्चों के साथ भारतीय भाषाओं में बात करने की बात को संस्कार डालें और अपनी भाषाओं की यात्रा को हम आगे बढ़ाएं। मोदी सरकार की नई शिक्षा नीति से अन्य भारतीय भाषाओं व हिंदी का समानांतर विकास होगा, ऐसा मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे सामूहिक प्रयासों से हिंदी न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु, विश्वपटल पर ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण समृद्ध भाषा के रूप में स्थापित होगी।

'हिंदी दिन' के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मैं हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

भारत माता की जय !

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2020

(अमित शाह)

एम. के. झाला
मुख्य विस्फोटक नियंत्रक
(विभागाध्यक्ष)
M. K. Jhala
Chief Controller of Explosives
(HOD)
Tel: 0712-2510103

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
पेट्रोलियम तथा विस्फोटक सुरक्षा संगठन
Petroleum and Explosives Safety Organisation
(पूर्व नाम - विस्फोटक विभाग)
(Formerly- Department of Explosives)
ए ब्लॉक, पाँचवा तल, सी जी ओ कॉम्प्लेक्स,
"A" Block, 5th Floor, CGO Complex,
सेमिनरी हिल्स, नागपुर 4400 06 (महा.)
Seminary Hills, Nagpur- 440006

संदेश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि पेसो का मध्यांचल, आगरा कार्यालय राजभाषा के क्षेत्र में नित नए आयाम स्थापित कर रहा है। मध्यांचल द्वारा नियमित रूप से वार्षिक गृह पत्रिका का प्रकाशन किया जाता रहा है एवं अब उसे वर्ष में दो बार - छमाही रुप से प्रकाशित करने का निर्णय, इस ओर कार्मिकों की रुचि एवं रचनात्मक प्रतिभा को दर्शाता है।

राजभाषा के विकास में कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के योगदान के लिए मैं उनको बधाई देता हूँ। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएं।

मैं इस पत्रिका के प्रकाशन की सुदीर्घ एवं सफल यात्रा के लिए शुभकामनाएं देता हूँ।

(एम. के. झाला)

E-mail: mkjhala@explosives.gov.in | Ph No. : 2510248 | Fax : 0712-2510577

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, आगरा
प्रधान आयकर आयुक्त-1 का कार्यालय
आयकर भवन, संजय प्लेस, आगरा-2

Government Of India
Ministry Of Home Affairs, Deptt. Of Official Language
Town Official Language Implementation Committee
Office Of The Principal Commissioner Of Income Tax-1
Aaykar Bhawan, Sanjay Place, Agra-2

फोन - 0562-2856493
फैक्स - 0562-2853064

फा. सं. : न.रा.का.स. (केन्द्रीय)/आगरा/.....रा.भा./संदेश प्रेषण/ 2020-21

दि0 06.10.2020

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि **"कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक"**, आगरा अपनी गृह पत्रिका **"मध्यांचल दर्पण"** के 17वें अंक का ई-प्रकाशन करने जा रहा है। राजभाषा के विकास तथा प्रचार-प्रसार में पत्र-पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है। विभागीय पत्रिका का प्रकाशन जहां एक ओर अधिकारियों और कर्मचारियों की सृजनात्मकता एवं साहित्यिक अभिरूचियों को अभिव्यक्त करने का सशक्त मंच प्रदान करता है वहीं दूसरी ओर पत्रिका का लगातार प्रकाशन राजभाषा में कार्य करने के लिए सकारात्मक माहौल बनाता है।

मैं पत्रिका के उत्तरोत्तर सफलता की कामना करती हूँ तथा पत्रिका के सार्थक एवं अनवरत प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ।

(ऊनू जौहरी)
अध्यक्ष, नराकास
एवं
प्र. आ.आ.-1, आगरा

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग,
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तरी क्षेत्र-2)
– x –
302,सी.जी.ओ.भवन-1, कमला नेहरू नगर
गाजियाबाद-201002 दूरभाष/फैक्स-0120-2719356
ई-मेल-ddriogzb-dol@nic.in एवं rionorthgzb@gmail.com

फा.सं.-क्षे.का.का.उ./पत्रिका-संदेश/214 दिनांक –15/10/2020

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक का कार्यालय, आगरा अपनी हिन्दी ई - पत्रिका "मध्यांचल दर्पण" का 17वाँ अंक प्रकाशित करने जा रही है । इसमें संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक कार्यालय के कार्मिकों की सृजनशीलता के नए आयाम दिखाई देंगे । मुझे पूरा विश्वास है कि बतौर ई-पत्रिका "मध्यांचल दर्पण" का यह अंक राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगा । पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों, रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(अजय मलिक)
उप निदेशक (कार्यान्वयन)

अध्यक्षीय उद्‌बोधन

मध्यांचल दर्पण की अनवरत एवं गौरवशाली यात्रा विगत 17 वर्षों से निरन्तर जारी है एवं यह कार्यालय राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार तथा प्रोत्साहन के प्रति पूर्ण समर्पित होकर नित नए आयामों के साथ इस यात्रा को जारी रखने के लिए सदैव प्रयासरत रहेगा । भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा जारी विभिन्न आदेशों / निदेशों के अनुसार राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहन देने के लिए पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन भी सभी विभागों / कार्यालयों का एक प्रमुख दायित्व है । इसी दायित्व के निवर्हन में एक कदम और आगे बढ़ाते हुए पेसो के मध्यांचल कार्यालय ने अपनी वार्षिक गृह पत्रिका को अब छमाही तौर पर प्रकाशित करने का निर्णय लिया है । उसी क्रम में छमाही ई-पत्रिका का यह प्रथम अंक आप सबके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए हर्षानुभूति हो रही है । पत्रिका के माध्यम से पेसो के मध्य अंचल एवं अधीनस्थ उपांचल कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के रचनात्मक कौशल को परिलक्षित करने के साथ ही राजभाषायी एवं अन्य गतिविधियों को भी सचित्र समाहित किया गया है ।

सरकार द्वारा राजभाषा को अधिक सशक्त, सर्वसुलभ और जनोपयोगी बनाने के लिए निरन्तर किए जा रहे प्रयत्नों तथा सरकार के प्रयासों एवं नीतियों को सार्थक करने में हमें और आपको अधिक उत्साह एवं लगन से कार्य करके अपना योगदान देने की आवश्यकता है । पेसो का मध्यांचल परिवार समेकित रूप से राजभाषा के विकास में सार्थक योगदान देने के लिए सदैव प्रयासरत है ।

पत्रिका प्रकाशन के इस उत्तरदायित्व के निर्वहन में मध्यांचल के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के निरन्तर सहयोग के लिए उनको बधाई देता हूँ एवं पत्रिका प्रकाशन समिति के प्रत्येक सदस्य को मैं उनके प्रयासों के लिए धन्यवाद देता हूँ ।

शुभकामनाओं सहित

(डा.ए.पी.सिंह)
उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक
एवं कार्यालयाध्यक्ष
कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक
मध्यांचल, आगरा

सम्पादक की कलम से

पेसो के मध्यांचल, आगरा की गृह पत्रिका का नवीनतम अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ । साथ ही यह बताते हुए भी खुशी हो रही है कि यह कार्यालय राजभाषा के क्षेत्र में नित नए आयाम स्थापित करते हुए आगे बढ़ रहा है । कार्यालय द्वारा विगत कई वर्षों से वार्षिक गृह पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है । मध्यांचल, आगरा एवं उसके अधीनस्थ सभी उपांचल कार्यालयों के कार्मिकों के रचनात्मक कौशल एवं कार्यालयों की विभिन्न राजभाषायी एवं अन्य गतिविधियों को समाहित करती हुई गृह पत्रिका के अब से वर्ष में दो अंक अर्थात् छमाही पत्रिका के प्रकाशन का निर्णय लिया गया है । छमाही गृह पत्रिका का यह प्रथम अंक आप सभी के सम्मुख प्रस्तुत है ।

वर्तमान में संपूर्ण विश्व जिस महामारी से लड़ रहा है उसने मानव जीवन और मन को नकारात्मक एवं सकारात्मक दोनों ही तरह से प्रभावित किया है और वह प्रभाव रचनाकारों की रचनाओं में मुखर होकर सामने आया है, पत्रिका में दिए गए लेख पढ़कर यह आप भलीभांति अनुभव कर पाएंगे । प्रतिकूल परिस्थितियाँ भी जीवन में कुछ न कुछ सीख देने ही आती है । यह हम पर निर्भर करता है कि इन परिस्थितियों को हम किस तरह और कितना अनुकूल बना पाते हैं । प्रतिकूल परिस्थितियों में भी विचलित न होकर अपने ध्येय की ओर अग्रसर होते रहना ही हमारी मानसिक दृढ़ता का द्योतक है ।

अपनी रचनाओं के माध्यम से पत्रिका प्रकाशन में अपना योगदान देने के लिए मैं रचनाकारों का धन्यवाद देता हूँ । सभी सुधि पाठकों के स्वस्थ एवं सुखद जीवन की मंगलकामनाओं के साथ मैं अपनी लेखनी को विराम देता हूँ । पत्रिका के आगामी अंक को और बेहतर ढंग से प्रस्तुत कर पाने के लिए आपके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी ।

(डा. एस.के.दीक्षित)
विस्फोटक नियंत्रक एवं
राजभाषा अधिकारी

कार्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति

वर्ष 2020 - 2021

1.	डा. ए.पी.सिंह, उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक	अध्यक्ष
2.	श्री ए.के.मेहता, विस्फोटक नियंत्रक	सदस्य
3.	डा. एस.के.दीक्षित, विस्फोटक नियंत्रक	राजभाषा अधिकारी
4.	डा. एम.के.सामोता, उप-विस्फोटक नियंत्रक	सदस्य
5.	श्री अशोक कुमार, उप-विस्फोटक नियंत्रक	सदस्य
6.	श्री अनिल कुमार शर्मा, कार्यालय अधीक्षक	सदस्य
7.	श्रीमती श्रावणी गांगुली, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	सदस्य
8.	श्री प्रमोद कुमार शर्मा, उच्च श्रेणी लिपिक	सदस्य
9.	श्री मदन मोहन गुप्ता, उच्च श्रेणी लिपिक	सदस्य
10.	श्रीमती नेहा सिंह, आशुलिपिक - III	सदस्य

पत्रिका प्रकाशन समिति

संरक्षक

डा. ए.पी.सिंह

उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक

(कार्यालयाध्यक्ष)

सम्पादक	सह सम्पादिका	कार्यकारी सम्पादक
डा.एस.के.दीक्षित	**श्रीमती श्रावणी गांगुली**	**श्री प्रमोद कुमार शर्मा**
विस्फोटक नियंत्रक	कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक	उच्च श्रेणी लिपिक

- सम्पर्क सूत्र -

पेट्रोलियम एवं विस्फोटक सुरक्षा संगठन
कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक
ए-विंग, द्वितीय तल, केन्द्रालय
63/4, संजय प्लेस, आगरा - 282002 (उत्तर प्रदेश)

दूरभाष - 0562 : 2521322 / 2523266 / 2523244 फैक्स - 0562 : 2527436
ईमेल - jtcceagra@explosives.gov.in वेबसाइट - http://peso.gov.in

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	लेख / रचनाएँ	लेखकों / रचनाकारों के नाम	पृष्ठ संख्या
1.	सरस्वती वन्दना		10
2.	उपलब्धि		11
3.	अवसाद - कारण, निवारण (10 अक्टूबर-विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस पर लेख)	श्रीमती सीमा दीक्षित, डा.सुबोध कुमार दीक्षित विस्फोटक नियंत्रक, कार्यालय सं.मु.वि.नि., आगरा	12
4.	कोरोना सिखा गया जीवन का रहस्य	श्री आशेन्द्र सिंह, विस्फोटक नियंत्रक कार्यालय विस्फोटक नियंत्रक, रायपुर	14
5.	पंचतंत्र	श्री डी.वी.सिंह, उप-विस्फोटक नियंत्रक कार्यालय विस्फोटक नियंत्रक, देहरादून	15
6.	मन के हारे हार है - मन के जीते, जीत	श्रीमती श्रावणी गांगुली, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा	15
7.	वर्ष 2020 - 2021 में हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित निबंध प्रतियोगिता - प्रथम पुरस्कृत निबंध	श्री प्रमोद कुमार शर्मा, उच्च श्रेणी लिपिक कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा	19
8.	वर्ष 2020-2021 में हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित निबंध प्रतियोगिता - द्वितीय पुरस्कृत निबंध	श्री मदन मोहन गुप्ता, उच्च श्रेणी लिपिक कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा	20
9.	वर्ष 2020-2021 में हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित चित्र देखकर कहानी लेखन प्रतियोगिता - प्रथम पुरस्कार	श्री मदन मोहन गुप्ता, उच्च श्रेणी लिपिक कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा	23
10.	वर्ष 2020-2021 में हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित चित्र देखकर कहानी लेखन प्रतियोगिता-द्वितीय पुरस्कार	श्री प्रमोद कुमार शर्मा, उच्च श्रेणी लिपिक कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा	24
11.	क्यूँकि उजाले को सराह पाने के लिए, अंधेरे का होना बेहद जरूरी है	सुश्री सुप्रिया गांगुली, पुत्री श्रीमती श्रावणी गांगुली, क.हि.अ कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा	25
12.	अच्छा लगता है किसी का "काश" होना	श्रीमती श्रावणी गांगुली, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा	26
13.	वर्ष 2020 - 2021 में हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित निबंध प्रतियोगिता - प्रथम पुरस्कृत निबंध	श्री दिनेश कुमार शुक्ल, आशुलिपिक ग्रेड - II कार्यालय उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, प्रयागराज	27
14.	वर्ष 2020-2021 में हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित निबंध प्रतियोगिता - द्वितीय पुरस्कृत निबंध	श्री कृष्ण कुमार केसरवानी, सहायक कार्यालय उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, प्रयागराज	29
15.	वर्ष 2020-2021 में हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित निबंध प्रतियोगिता - तृतीय पुरस्कृत निबंध	श्री विजय कुमार गुप्ता, अवर श्रेणी लिपिक कार्यालय उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, प्रयागराज	30
16.	प्रदूषण - एक गम्भीर समस्या	सुश्री नैन्सी पोरवाल, पुत्री श्री मदन मोहन गुप्ता, उ.श्रे.लि कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा	31
17.	प्राकृतिक आपदा जलप्रलय (बाढ़)-कारण एवं दुष्परिणाम	सुश्री लता कुमारी, पुत्री श्री प्रकाश चन्द, सहायक कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा	33
18.	मध्यांचल, आगरा एवं अधीनस्थ उपांचल कार्यालयों में राजभाषायी गतिविधियों का सचित्र विवरण		35
19.	मध्यांचल, आगरा एवं अधीनस्थ उपांचल कार्यालयों में हिंदी दिवस / सप्ताह / पखवाड़ा आयोजन - सचित्र विवरण		36
20.	मध्यांचल, आगरा एवं अधीनस्थ उपांचल कार्यालयों में अन्य विविध गतिविधियों का सचित्र विवरण		41
21.	पेसो के 122वें स्थापना दिवस (09.09.2020) समारोह के उपलक्ष्य में दिनांक 17.08.2020 से 09.09.2020 तक मध्यांचल, आगरा एवं उसके अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों का सचित्र विवरण		43

****

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित रचनाकारों / लेखकों के हैं ।
प्रकाशन समिति का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

सरस्वती वन्दना

वर दे, वीणावादिनी वर दे !
प्रिय स्वतंत्र रव अमृत मंत्र नव
भारत में भर दे !

काट अंध उर के बंधन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर
कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे !

नव गति, नव लय, ताल-छंद नव
नवल कंठ, नव जलद-मन्द्ररव,
नव नभ के नव विहग-वृंद को
नव पर, नव स्वर दे !

वर दे, वीणावादिनी वर दे !

सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला"

उपलब्धि

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2018 – 2019 के लिए कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, मध्यांचल, आगरा को केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों (11 से 50 तक कार्मिकों वाले) की श्रेणी में **क्षेत्रीय स्तर पर (उत्तरी क्षेत्र - 2) प्रथम पुरस्कार प्रदान किए जाने की घोषणा की गई है ।** वर्तमान में कोविड 19 की वजह से उत्पन्न परिस्थितियों के कारण पुरस्कार वितरण नहीं किया जा सका है ।

****

नराकास की 77वीं (ऑनलाइन) बैठक में वर्ष 2019-2020 में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग एवं कार्यान्वयन के लिए **नगर स्तर पर** कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, मध्यांचल, आगरा के लिए द्वितीय पुरस्कार की घोषणा की गई । पुरस्कार स्वरूप कार्यालय को शील्ड- एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया ।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

गृह मंत्रालय (राजभाषा विभाग)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (के.का.),

आयकर भवन, संजय प्लेस, आगरा – 282002

प्रशस्ति पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि वर्ष/~~छमाही~~/~~तिमाही~~ ......2019 – 20...... में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग एवं कार्यान्वयन में ...पैट्रोलियम एवं विस्फोटक सुरक्षा संगठन..... का कार्य, आगरा नगर स्थित समस्त केन्द्र सरकार के कार्यालयों / ~~निगमों~~ / ~~उपक्रमों~~ में ...द्वितीय.........स्थान पर रहा। बधाई!

विभाग/संगठन से अपेक्षा की जाती है कि राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में उत्तरोत्तर प्रगति करता रहेगा।

प्रधान आयकर आयुक्त-1

अध्यक्ष

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति,

आगरा

दिनांक : 16.07.2020

"अवसाद" - कारण, निवारण

10 अक्टूबर- 'विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस' पर एक लेख

श्रीमती सीमा दीक्षित
डा. सुबोध कुमार दीक्षित
विस्फोटक नियंत्रक, आगरा

यह लेख एक ऐसी समस्या पर है जिस पर आमतौर पर लोग बात करना भी पसंद नहीं करते हैं | अवसाद यानि डिप्रेशन एक ऐसी अंधेरी गुफा है जिसका कोई ओर छोर नहीं है, जिससे निकल पाना असंभव तो नहीं है, लेकिन कठिन अवश्य है | आए दिन हम सब लोग पढ़ते व देखते रहते हैं कि बहुत कम उम्र के बच्चों ने आत्महत्या कर ली या किसी दूसरे की हत्या कर दी या कोई और घातक कदम उठाया या फिर नशे की गिरफ्त में आ गए । हाल ही में घटी दो घटनाओं का जिक्र करना होगा जिसने हम सबका ध्यान अपनी ओर खींचा है-

- सुशांत सिंह राजपूत द्वारा आत्महत्या,
- लखनऊ के उच्च पदासीन अधिकारी की शूटर बेटी (नाबालिग) द्वारा अपने भाई और मां की हत्या करना ।

खबर सुनते ही लोग प्रतिक्रिया देना शुरू कर देते हैं - ऐसी क्या कमी थी, ऐसी भी क्या समस्या थी जो ऐसा कदम उठा लिया | त्वरित प्रतिक्रिया देना बहुत आसान होता है पर व्यक्ति विशेष के मन में क्या चल रहा है, वह किस मानसिक दबाव से गुजर रहा है, किन विपरीत परिस्थितियों ने उसे यह कदम उठाने के लिए मजबूर किया है- यह ना कोई जानता है और ना ही शायद कोई जानना चाहता है।

यह अवसाद की वह स्थिति है जो या तो आत्मघाती कदम उठाती है या किसी और के लिए घातक हो जाती है, जैसा उपरोक्त दो उदाहरणों में देखा गया जिनका जिक्र पहले किया गया है - सुशांत सिंह राजपूत ने आत्मघाती कदम उठाया । लखनऊ के पुलिस अधिकारी की बेटी ने अपने परिवार के लिए घातक कदम उठाया और भाई और माँ की हत्या कर दी । बहुत जांच पड़ताल के बाद सामने आया कि दोनों ही 'अवसाद' से ग्रस्त थे ।

क्या है यह 'अवसाद' और कैसे यह हमको अपने चंगुल में फंसा रहा है ।

अवसाद एक गंभीर मानसिक बीमारी है, जिसमें व्यक्ति गहन निराशा, हताशा का शिकार हो जाता है । व्यक्ति अकेलापन महसूस करता है, भूख प्यास लगना खत्म हो जाती है । नींद नहीं आना, बहुत ज्यादा गुस्सा आना, घबराहट होना, बहुत उदास रहना, किसी से बात ना करना, किसी से मिलना जुलना नहीं इत्यादि अवसाद के लक्षण है ।

अवसाद एक बेहद गंभीर बीमारी है जिसकी शुरुआत सामान्य तरीकों से होती है । हम सभी के जीवन में कभी ना कभी वह समय अवश्य आता है जब हम जिंदगी से उदास हो जाते हैं और अपना जीवन निरर्थक लगने लगता है । एक उदासी, निराशा का आवरण हमें चारों ओर से ढक लेता है । यह शुरुआत होती है अवसाद की ।

यह तो बात हुई अवसाद के शुरुआती लक्षणों की । अब बात करते हैं उन परिस्थितियों, स्थितियों की जब व्यक्ति अवसाद का शिकार हो जाता है । अवसाद की समस्या किसी भी उम्र में हो सकती है पर आजकल यह युवा पीढ़ी में अधिक देखने को अधिक मिल रही है ।

अवसाद की समस्या को एक बेहद आसान तरीके से समझा जा सकता है कि जब कोई घटना या परिस्थिति हमारे मन मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव डालती है और हम आहत महसूस करते हैं, अपनी बात को किसी से कह नहीं पाते हैं तो उदासी के चक्रव्यूह में फंसते चले जाते हैं और अन्ततः अवसाद के शिकार हो जाते हैं |

अवसाद के कई कारण हो सकते हैं - खराब आर्थिक स्थिति या व्यापार में घाटा, किसी प्रियजन का वियोग, शारीरिक कमियां या विकलांगता, पढ़ाई से जुड़ी हुई समस्याएं, पियर प्रेशर जिससे आज कल सभी बच्चे गुजर रहे हैं, माता-पिता की महत्वाकांक्षाओं का बोझ, घरेलू भेदभाव, कैरियर सम्बन्धी समस्यायें, युवावस्था में सही मार्ग दर्शन और सहयोग का अभाव - ऐसे बहुत से कारण और परिस्थितियां हैं जिनसे व्यक्ति अवसाद ग्रस्त हो जाता है । कई बार अवसाद का समय कुछ ही हफ्तों का होता है और इंसान खुद ही इससे बाहर आ जाता है, लेकिन हमेशा ऐसा नहीं होता है और समस्या विकराल रूप ले लेती है जिसका अंत किसी घातक घटना से होता है।

'अवसाद' की समस्या इतनी कठिन होती जा रही है कि लगभग हर व्यक्ति तनाव ग्रस्त और निराश होता जा रहा है | इंडिया टुडे की रिपोर्ट के अनुसार भारत की जनसंख्या के लगभग 7.5% लोग अवसाद से पीड़ित हैं और इनमें से लगभग 10% लोगों में आत्महत्या की प्रवृत्ति पाई गई है । यह समस्या केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के कई देशों में है ।

इस समस्या को देखते हुए और दुनिया भर के मानसिक स्वास्थ्य मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से विश्व स्वास्थ्य संगठन - W.H.O ने 10 अक्टूबर को **'विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस'** के रूप में मनाने का निर्णय लिया है । इस दिवस का उद्देश्य लोगों को मानसिक रूप से स्वस्थ बनाने के लिए जागरूक और सतर्क करना है।

इस बीमारी से लड़ने में परिवार की भूमिका सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण होती है | ध्यान देने की जरूरत होती है कि कहीं घर का कोई सदस्य उदास, हताश तो नहीं है, युवा बच्चों की आदतों में कहीं परिवर्तन तो नहीं आ रहा है, खाने-पीने की आदतों में तो बदलाव नहीं आ रहा है, कहीं अकेलापन तो नहीं बढ़ रहा है, आर्थिक नुकसान से घर का मुखिया हताश-निराश तो नहीं हो रहा है | घर के सदस्यों की जिम्मेदारी बनती है कि अवसाद के लक्षणों को पहचानें, निराश व्यक्ति से बात करें, उसका आत्म बल बढ़ाएं, उन्हें विश्वास दिलाएं कि यह स्थितियां हमेशा ऐसी ही नहीं रहेंगी, उनसे बात करें और घर का वातावरण खुशनुमा बनाए रखें | यदि इन सामान्य बातों से सुधार नहीं होता है तो स्थिति की गंभीरता को समझते हुए कभी भी इस बात को छुपाने या टालने का प्रयास ना करें और समय रहते ही कुशल मनोवैज्ञानिक से संपर्क करें । उनकी काउंसलिंग करवाएं | उनकी सलाह, दवाइयों और सही देखरेख से आपके परिवार का कोई अनमोल सदस्य, आपका प्यारा दोस्त, आपके बच्चे इस अवसाद के चक्रव्यूह से अवश्य ही बाहर आ जाएंगे । बस आवश्यकता है सही समय पर इस समस्या को समझने की और सुलझाने की । और हां एक और सबसे महत्वपूर्ण बात जो हमें खुद भी समझनी है और अपने परिवार एवं दोस्तों को भी समझानी है कि परिस्थितियां कैसी भी हो पर अपना आत्मबल बनाए रखें क्योंकि - **"मन के हारे हार है और मन के जीते जीत"** |

"कोरोना सिखा गया जीवन का रहस्य

आशेन्द्र सिंह,
विस्फोटक नियंत्रक, रायपुर

कोरोना यानी कोविद-19 ने मानव जीवन को ऐसे झकझोर कर रख दिया है, कि इंसान सही मायनों में जीवन के गूढ़ रहस्य को समझ गया है । ऐसी जिंदगी जिसकी कल्पना इस शताब्दी मे मानव ने कभी की ही नहीं होगी, देखने को मिल रही है । एक ऐसा वायरस (विषाणु) जिसने नगण्य आकार का होते हुए भी सारे विश्व में हाहाकार मचा दिया । इस वायरस की चपेट में दुनिया के सभी आ गए हैं, चाहे वह देश कितना ही विकसित क्यों न हो, अमेरिका, रुस जैसी महाशक्तियों ने भी घुटने टेक दिए । दुनिया के किसी भी देश के शोधकर्ता, लगभग एक वर्ष का समय व्यतीत होने के बावजूद भी किसी वैक्सीन की खोज करने में कारगर साबित नहीं हो पा रहे हैं । अनेक प्रयासों के बावजूद भी अभी तक इस दिशा में आशातीत सफलता प्राप्त नहीं हुई है या यह कहें कि इस अदृश्य वायरस की काट अभी तक कोई भी देश नहीं ढूंढ पाया है ।

गत लगभग 10 महीनों से सभी देशों में महामारी जैसी स्थिति बनी हुई है और सभी देशों की अर्थव्यवस्था पूरी तरह से चरमरा गई है । शासकीय स्तर पर अनेक उपाय जैसे कि लॉकडाउन, सामाजिक - शारीरिक दूरियां, मास्क एवं सैनिटाइजर का प्रयोग भी नाकाफी साबित हुआ है । बड़ी संख्या में लोग अपनी जान गवा रहे हैं, परंतु इस महामारी का कोई अंत होता दिखाई नहीं देता। मानव जीवन इतना नीरस व निरीह हो गया है कि व्यक्ति की जिंदगी में जैसे घर के अंदर बंद रहने के अतिरिक्त शून्य विकल्प रह गए हैं । इन सब के बावजूद भी सभी देशों की सरकारें एक समन्वय / संतुलन बनाए हुए बिगड़ी हुई अर्थव्यवस्था में जान फूंकने की कोशिश कर रही हैं ।

इस महामारी ने लोगों की दिनचर्या और कार्यशैली को पूरी तरह से बदल दिया है या यूं कहें कि इंसान ने अपने आपको परिस्थितियों के अनुरुप ढालने का प्रयास किया है । चाहे कार्यालय की गतिविधियां हो या मीटिंग करने का अंदाज़ । एक ऐसा अज्ञात भय लोगों के मन में व्याप्त हो गया है कि लोग एक दूसरे से क्या अपनों से और खुद की परछाई से भी डरने लगे है । परंतु मानव जाति की यह विशेषता है कि वह बहुत जल्दी अपने बुरे समय को भूल जाता है और हमेशा एक मृगमरीचिका मे फंसा रहता है । इंसान को चाहिए कि वह बुरे समय से कुछ नसीहत ले और उसे अपने भविष्य में आत्मसात करें जिससे कि उसे दुख के समय भी एक मानसिक बल मिल सके ।

जैसे हर सिक्के के दो पहलू होते हैं उसी प्रकार से हम यह कह सकते हैं कि इस कोरोना काल ने हमें ई-तकनीक के क्षेत्र में बुलंदियों पर पहुंचा दिया। उदाहरण के तौर पर हम 500 से 800 लोग घर बैठकर वीडियो कॉन्फ्रेसिंग के माध्यम से एक दूसरे से जुड़ जाते हैं, अध्यापक अपने छात्रों को ई-तकनीक द्वारा अध्ययन कराते हैं। बहुत सारी कंपनियां घर से ऑफिस का काम करने को प्राथमिकता दे रही हैं । अच्छा पहलू यह है कि इस अभूतपूर्व खोज की जड़ कोरोना ही है जिसने हमें अनेक विकल्प खोजने पर बाध्य कर दिया ।

सच ही कहा गया है कि, "आवश्यकता आविष्कार की जननी है" । आज हमारी आवश्यकता है कि हम वैकल्पिक संसाधनों के प्रयोग से अपनी दिनचर्या को कम से कम प्रभावित होने दे ।

अंतत: आशा करूंगा कि इस महामारी का बुरा युग शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा और व्यक्ति अपनी सामान्य जिंदगी जीना प्रारंभ कर देगा ।

पंचतंत्र

डी.वी.सिंह
उप-विस्फोटक नियंत्रक, देहरादून

जीवन तो है एक कड़वा सत्य, स्वीकार कर जहन में भी उतार लो ।
सफलता की सीढ़ी 'गर है चढ़नी, पंचतंत्र अभी से तुम अपना लो ।।

अतीत के पन्ने जो पलट चुके, उन पन्नों को फिर क्यों दोहराना ।
नई रोशनी ले रोज उगता सूरज, भविष्य में कदम हमेशा आगे बढ़ाना ।।

आज हैं साथ वो कल नहीं रहेंगे, दूसरों से क्यों ज्यादा उम्मीद रखना ।
रिश्तों के धागे बड़े होते हैं नाजुक, मुश्किल है बड़ा सबको खुश रखना ।।

किसी से अपने को कम आंकना, ख्याल जहन में कभी लाना नहीं चाहिए ।
तकदीर बदलते तनिक देर नहीं लगती, अच्छी सोच किए आगे बढ़ना चाहिए ।।

कशमकश में गुज़ार अपनी जिंदगी, चार दिन भी पूरे कर नहीं पाएंगे ।
चिंता से शुरू हो चिता पर खत्म, जीवन का सुख कभी भोग नहीं पाएंगे ।।

मन के हारे हार है - मन के जीते जीत

श्रावणी गांगुली
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, आगरा

कहा जाता है कि हर सिक्के के दो पहलू होते हैं अर्थात् हर वस्तु, बात, परिस्थिति के दो पहलू होते हैं - सकारात्मक और नकारात्मक । यह हम पर निर्भर करता है कि हमारा दृष्टिकोण उसके किस पहलू की ओर है - सकारात्मक की ओर या नकारात्मक की । जिनको ईश्वर ने जन्मजात सकारात्मकता का गुण प्रदान किया है वह बहुत खुशकिस्मत हैं क्योंकि ईश्वर के आशीर्वाद के रूप में यह गुण उनको प्राप्त हुआ है एवं इसकी बदौलत वह जीवन में आने वाली कई कठिन परिस्थितियों को हँसी खुशी झेल जाते हैं या कहिए झेल पाते हैं । परन्तु जो नकारात्मकता के गुणों से सुसज्जित हैं उनके लिए कठिन परिस्थितियों की आवश्यकता नहीं, वह सामान्य परिस्थितियों को भी अपने इस नकारात्मकता के बल पर कठिन बना लेने का माद्दा रखते हैं । यह बात अलग है कि वह, मानव जन्म के रूप में प्रदत्त ईश्वर के इस खूबसूरत नेमत का आनन्द लेने से बिल्कुल वंछित रह जाते हैं क्योंकि नकारात्मकता उनमें अच्छाई में भी बुरा ढूंढने की प्रवृत्ति, निराशा, असुरक्षा, भय आदि का भाव उत्पन्न कर देती है । उनके मन के यह भाव उनके परिचितों, सगे-संबंधियों, मित्रों यहाँ तक कि समाज के अधिकाँश लोगों के साथ तालमेल बिठा पाने में बाधा बन कर खड़े होते हैं जिसके परिणामस्वरूप नकारात्मकता का भाव उनके एकाकीपन का भी कारण बन जाता है । मन में उत्पन्न होने वाले निराशाजनक विचार और उस पर उनको साझा करने वाला कोई नहीं, ऐसे व्यक्ति को अवसादग्रस्त होने से भला कौन रोक सकता है । अवसादग्रस्त मनुष्य किस हद तक जाकर अपना कोई नुकसान कर सकता है या कोई कदम उठा सकता है, उसका अंदाजा लगाना - एक सामान्य व्यक्ति की कल्पना से भी परे है ।

वर्ष 2020 में फैली वैश्विक महामारी कोरोना (कोविड - 19) भी एक ऐसी परिस्थितिजन्य उत्पन्न समस्या है जिसने न केवल किसी एक देश विशेष को बल्कि समग्र विश्व को अपनी चपेट में ले लिया है और भरसक प्रयत्नों और उपायों के बावजूद जिससे आज भी विश्व पूर्ण रूप से उबर नहीं पाया है । इस अदृश्य वायरस ने देखते ही देखते अचानक से विश्व भर में असंख्य लोगों को अपनी गिरफ्त में ले लिया । इससे पहले कि लोग कुछ समझ पाते और सम्भल पाते, भारी संख्या में लोग काल के गाल में समा गए । चूंकि यह एक अदृश्य वायरस है एवं इस तरह से उसके हमले के बारे में किसी ने कल्पना भी नहीं की थी अत: तत्काल, बचाव के उपाय कर पाना भी संभव नहीं था । परिणाम स्वरूप इस महामारी से अपने देश के आम जनमानस को बचाने के लिए प्रभावित देशों के शासन को लॉकडाउन जैसा एक बहुत बड़ा निर्णय लेना पड़ा । लॉकडाउन कोई नया शब्द नहीं था लेकिन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उसका जो दायरा था, वह निश्चित ही सबके लिए नया था । आज तक किसी कम्पनी, किसी फैक्टरी आदि के, किसी खास परिस्थिति में बन्द हो जाने की स्थिति को लॉकडाउन कहा जाता था और वहाँ के कार्मिकों को वह अवश्य प्रभावित करती थी परन्तु वैश्विक स्तर पर उन प्रभावितों की संख्या नगण्य हुआ करती थी और बड़े पैमाने पर इसका किसी को आभास भी नहीं होता था । परन्तु विश्व के देशों में लॉकडाउन, यह सम्पूर्ण विश्व के लिए एक नया अनुभव था ... कम से कम भारत देश की आजादी के बाद से आज तक के इतिहास में तो ऐसा कुछ पढ़ने सुनने को नहीं मिला, उससे पूर्व की स्थिति के बारे में कुछ टिप्पणी करना संभवत: यहाँ आवश्यक नहीं है ।

जनहित में सरकार ने निर्णय लिया, आदेश जारी किया और 22 मार्च 2020 से सम्पूर्ण भारत में लॉकडाउन घोषित कर दिया गया । अदृश्य वायरस का आतंक और उस पर देशभर में लॉकडाउन की घोषणा । अनुभव नया अवश्य परन्तु एक ऐसी परिस्थिति जहाँ जिंदगी ठहर सी गई प्रतीत होने लगी । शासन की ओर से घोषणा होने भर की देर थी, मानव का चंचल मन, इस घोषणा की वजह से उत्पन्न होने वाली तमाम उन परिस्थितियों पर चिंतन मनन करने में व्यस्त हो गया जो न केवल नयी थीं वरन् अपने साथ तमाम प्रश्न लेकर भी आई थीं ।

स्कूल-कॉलेज बन्द, कार्यालय बन्द, दुकानें बन्द, व्यावसायिक प्रतिष्ठान बन्द, आवागमन के सब परिवहन बन्द यहाँ तक कि आसपड़ोस में एक दूसरे के घर आना जाना भी बन्द, कुल मिलाकर सम्पूर्ण देश बन्द । मकसद सिर्फ एक - **प्रत्येक देशवासी के जीवन की सुरक्षा ।** सरकार का आदेश - पालन सभी को अनिवार्यत: करना ही है परन्तु मिश्रित प्रतिक्रिया - कहीं खुशी कहीं गम, कुल मिलाकर फिर वही सिक्के के दो पहलू - सकारात्मक और नकारात्मक । सकारात्मक पहलू खुशी के रूप में सामने आया - कुछ सावधानियाँ बरतकर उस अदृश्य वायरस के प्रभाव से स्वयं को सुरक्षित किया जा सकता है, स्वजन घर पर ही साथ रहेंगे तो उनकी सुरक्षा के प्रति आश्वस्त रहा जा सकेगा, वजह जो भी रही हो - पर कुछ दिन परिवार के साथ अच्छा समय व्यतीत किया जा सकेगा, दौड़भाग और आपाधापी भरी जिंदगी से हटकर कुछ समय विश्राम के लिए मिलेगा, और तो और छोटे / नादान बच्चों के लिए तो अनिश्चित काल के लिए स्कूल बन्द होना ही खुशी का कारण बन गया ।

वहीं दूसरी ओर अचानक से सब कुछ यूँ बन्द हो जाना परेशानी का सबब भी बना । बच्चे जो घर से दूर रहकर पढ़ रहे हैं या नौकरी कर रहे हैं - परिवहन बन्द हो जाने के कारण घर नहीं लौट पाए और माता-पिता उनके स्वास्थ्य एवं कुशलता को लेकर चिंतित रहे । प्राइवेट नौकरियाँ करने वाले लोग अपनी नौकरी चले जाने या बन्दी के दौरान की तनख्वाह को लेकर सशंकित रहे । दिहाड़ी मज़दूरों का काम बन्द हो जाने के कारण उनके सामने घर परिवार चलाने की समस्या उत्पन्न हो गई । अन्तर्राष्ट्रीय आवाजाही अनिश्चितकाल के लिए थम जाने की आशंका से पर्यटन जनित व्यवसाय से सम्बद्ध लोगों को भी अपने आय का ज़रिया बन्द होता हुआ ही नज़र आया । बहुत से लोग तो इस अनिश्चितता, असुरक्षा की आशंका, घर बन्दी आदि के कारण अवसादग्रसित भी हो गए ।

महामारी से उत्पन्न परिस्थिति की वजह से ऐसे तमाम अच्छे या बुरे अनुभव लोगों को हुए होंगे जिनमें से कुछ का ही उल्लेख ऊपर किया गया है परन्तु फिर भी ऊपर उल्लिखित सुखद वजह भी कुछ समय तक तो लोगों / परिवारीजन को अच्छे लगे और ऊर्जा प्रदान करते रहे लेकिन वह स्थाई रूप से सुखद नहीं थे । प्रतिदिन घर पर ही रहकर दिन व्यतीत करना और एक ही ढर्रे पर काम करते करते लोग ऊबने लगे और शारीरिक रूप से स्वस्थ रहकर मानसिक रूप से अस्वस्थ होने लगे ।

ऐसे में सही मायने में एक सकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाला व्यक्ति ऐसी तमाम विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं की खुशी तलाश सकता है, अपने आपको ऐसे किसी भी संकटकाल में भी मानसिक एवं शारीरिक रूप से न केवल स्वस्थ बल्कि और दृढ कर सकता है । आवश्यकता है इस बात कि वह किसी भी नकारात्मक परिस्थिति को Blessing in Disguise के रूप में देखने की क्षमता स्वयं में विकसित कर ले, सकारात्मक विचार अपने आप ही मन में आने लगेंगे । उदाहरण के तौर पर हम कोरोना संकट को ही लेते हैं । इस महामारी के चलते जो भी व्यक्ति किसी विशेष परिस्थितिवश भारी मुसीबत में पड़ गए, उनके प्रति पूर्ण सहानुभूति रखते हुए - सामान्य जन की बात करते हैं, जो चाहें तो इसमें भी सकारात्मकता तलाश सकते हैं -

1- परिस्थिति स्वयं उत्पन्न हुई है एवं टालना सम्भव नहीं, सुरक्षित रह कर इसे झेलना ही एक मात्र उपाय है ।
2- संकट का निराकरण हमारे हाथ में नहीं है । जिस स्तर पर इसका समाधान या निराकरण संभव है उस स्तर पर हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं । हमारा इसे लेकर व्यर्थ में चिंतित रहना समस्या के समाधान में कोई मदद नहीं करने वाला वरन् हमारे स्वास्थ्य और पारिवारिक जीवन को अवश्य प्रभावित करेगा । इसलिए इससे बचाव के लिए बताए जा रहे उपायों को अमल करके सुरक्षित रहने में ही समझदारी है न कि इसे लेकर चिंतित होने में ।
3- सरकारी हो या प्राइवेट नौकरी - आजीविका कमाने की दौड़भाग भरी जिंदगी में परिवार या बच्चों के लिए तो छोड़िए, कभी-कभी स्वयं के लिए समय निकाल पाना भी संभव नहीं हो पाता है । इस घर बन्दी के समय को, समय की कमी के कारण अधूरे छूटे हर उस काम को पूरा करने में उपयोग किया जाए जो हमारे लिए आवश्यक है या जो हमारे और परिवार की खुशियों के लिए नितान्त जरूरी है ।
4- छोटे से छोटा काम - चाहे वह घर पर सभी का एक साथ बैठकर भोजन करना हो या कार्य की व्यस्तता के हटकर परिवार के साथ बैठकर इन्डोर गेम खेलना या बच्चों की लाइफ में क्या चल रहा है - वह जानना, बच्चों को समय देना, एक-दूसरे की पसन्द के कार्य करके उन्हें छोटी-छोटी खुशी प्रदान करना आदि । हमें यह महसूस होगा कि यह एक खुशहाल पारिवारिक जीवन के निर्वहन के लिए अत्यन्त आवश्यक है परन्तु समय की कमी के कारण हमारा (अपवादों को छोड़कर) कभी इस ओर ध्यान ही नहीं गया ।
5- प्रतिदिन आवाजाही के दौरान प्रदूषण के चलते धीरे-धीरे हमारा स्वास्थ्य कहीं न कहीं प्रभावित हो रहा था । घर बन्दी के कारण हम एक तरफ जहाँ उससे बचे हुए है वहीं दूसरी ओर घर पर रहकर समय से भोजन करके, अपनी पसन्द का भोजन करके, भरपूर नींद लेकर, व्यायाम एवं वॉक आदि करके न केवल हम स्वस्थ रह सकते हैं वरन् यदि किसी वजह से अस्वस्थ थे तो भी भरपूर आराम करके स्वास्थ्य लाभ कर सकते हैं ।
6- गाने सुनना, गाने गाना, चित्र बनाना, बागबानी करना, भोजन बनाना, विविध व्यंजन बनाना, मित्रों के साथ बातचीत करना, परिवार के साथ क्वालिटी समय व्यतीत करना यहाँ तक कि ज्ञान अर्जित करना आदि ऐसे तमाम कार्य हैं जो एक इंसान के शौक में शुमार हो सकते हैं - जिन्हें करके वो अपनी थकान तक उतार सकता है परन्तु समयाभाव और व्यस्त जीवनशैली के चलते वह शौक कहीं मन में ही दबकर रह गए थे । घरबन्दी

का समय अपने शौक पूरे करने का एक बहुत बढ़िया समय रहा और इतना समय भी कभी मिलेगा यह कल्पना से परे था ।

7- जिनके घर में वृद्ध माता-पिता साथ रहते हैं उनको एक बहुत अच्छा अवसर मिला उनकी सेवा करके पुण्य कमाने का । वृद्धावस्था में माता-पिता को भोजन की भूख कम और अपनत्व, प्यार और संतान का सामीप्य पाने और दो मीठे बोल सुनने की भूख अधिक होती है। घरबन्दी ने इसके लिए भरपूर अवसर प्रदान किया है।

8- पुराने समय से यह व्यवस्था चली आई है कि बाहर के कामकाज करना पुरूषों की जिम्मेदारी है और घर के कामकाज स्त्रियों की । समय के साथ-साथ हुए परिवर्तनों में बाहर के कामकाज में स्त्रियों की भागीदारी तो अवश्य हुई पर घर के कामकाज में पुरूषों की भागीदारी (अपवादों को छोड़क) का प्रतिशत आज भी नगण्य सा ही है । हाँ, यह अलग बात है कि घर के कामकाज में स्त्रियों की मदद के लिए अब maid servants की एक अहम भूमिका है । घरबन्दी के दौरान maid servants के भी न आने के कारण शत-प्रतिशत तो नहीं परन्तु काफी हद तक sharing is caring वाली भावना उत्पन्न हुई है एवं घर के कार्यों में पुरूषों की भागीदारी भी शामिल हुई है जो एक परिवार की दृष्टि से देखा जाए तो बेहद सकारात्मक पहलू है । यह बच्चों के समक्ष, घर में आपस में मिल-बांटकर काम करने का उदाहरण पेश करता है ।

9- घर बन्दी ने, कुछ नया सीखने का भरपूर अवसर प्रदान किया है । प्रौद्योगिकी के इस समय में आजकल पूरी दुनिया मुट्ठी में है । आप जो चाहे सीख सकते हैं, जो चाहे कर सकते हैं - ऑनलाइन हर तरह ही सुविधा उपलब्ध है ।

10- धीरे-धीरे स्थितियां सामान्य होने के साथ-साथ स्कूल की पढ़ाई भी शुरू कर दी गई परन्तु ऑनलाइन । ऐसे में छोटे बच्चों की ऑनलाइन पढ़ाई शिक्षकों के साथ-साथ अभिभावकों के लिए भी एक बहुत चुनौतीपूर्ण काम था । विवशता की वजह से ही सही परन्तु ऐसे में बहुत से अभिभावकों को इन्टरनेट का प्रयोग, ऑनलाइन लिंक के माध्यम से जुड़कर सेशन अटेन्ड करना, ई-मेल करना आदि तमाम नई चीजें सीखने को मिलीं जो भविष्य में उनके लिए ही लाभदायक होंगी । इस तरह की परिस्थिति उत्पन्न न होने से शायद अभिभावक जीवन में कभी भी इन सब चीजों को सीखने का प्रयास ही नहीं करते क्योंकि इसके बिना भी उनका काम चल ही रहा था ।

11- अन्त में देखा जाए तो कोरोना काल में हम सभी के व्यय में भी काफी कमी आई है - स्कूल कॉलेज या ऑफिस या किसी भी प्रकार के व्यवसाय के लिए न जाने से परिवहन पर होने वाला कोई खर्च नहीं हुआ है, वर्तमान समय में बाहर जाकर होटलों या रेस्टोरेन्ट्स में खाना खाने का चलन बहुत बढ़ गया है, परन्तु कोरोना काल में इस पर भी होने वाला व्यय भी नहीं हुआ है । ऐसे ही घूमने फिरने जाना, शौक पूरा करने के लिए शॉपिंग करना आदि ऐसे तमाम चीजें हैं जो बन्द रहने की वजह से कहीं न कहीं बचत भी हुई है ।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि हर प्रतिकूल परिस्थिति में कुछ न कुछ अनुकूल भी अवश्य होता है । आवश्यकता है स्वयं का दृष्टिकोण सकारात्मक रखने का और सकारात्मक सोच रखकर प्रतिकूल परिस्थिति से बाहर निकलने का हर सम्भव प्रयास करने का ।

वर्ष 2020 - 2021 में हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कृत निबन्ध

विषय : पेसो, आगरा कार्यालय में राजभाषा कार्य की विकास यात्रा - योगदान एवं संभावनाएं

प्रतिभागी - श्री प्रमोद कुमार शर्मा, उच्च श्रेणी लिपिक

भाषा हमारे आत्मविश्वास, एकता और स्वदेशीपन की बुनियाद होती है । भाषा हमें आत्मनिर्भर बनाते हुए हमारी स्वतन्त्रता, समानता एवं राष्ट्रीयता से जुड़ी होती है । दुनिया के सभी विकसित देश अपनी अपनी भाषाओं में कार्य करते हैं । वहाँ शिक्षा, विज्ञान, कानून, कम्प्यूटर, तकनीक आदि सब उनकी अपनी भाषा में उपलब्ध है । फ्राँस, जर्मनी, जापान, कोरिया, चीन, इंग्लैण्ड, अमेरिका, रूस आदि कई देश सभी अपनी अपनी भाषाओं में काम करते हैं । सच तो यह है कि इनके विकसित होने में इनका अपनी भाषा में काम करना बहुत महत्वपूर्ण है । हमें यदि विकसित से आत्मनिर्भर बनना है तो हमें सबसे पहले अपनी भाषा में काम करने की आदत डालनी पड़ेगी । सरकार के कामकाज की ऐसी भाषा होनी चाहिए जो देश के जन-जन की समझ में आए तथा सरकार की नीतियों नियमों, कार्य करने की तरीकों, सरकार की योजनाओं को अच्छी तरीके से समझ सके । नि:सन्देह, भारत में यह स्थान हिंदी को प्राप्त होना चाहिए तथा उस पर अमल भी होना चाहिए । 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया तथा हिंदी के महत्व को बताने और इसके प्रचार प्रसार के लिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अनुरोध पर 1953 से प्रतिवर्ष हम 14 सितम्बर को हिंदी दिवस के तौर पर मनाते चले आ रहे हैं ।

राजभाषा के प्रचार प्रसार में पेसो का आगरा कार्यालय हमेशा से अग्रणी भूमिका निभाता चला आ रहा है । आज़ादी के समय कार्यालय लाहौर से आगरा में शिफ्ट हुआ तथा 1980 - 81 में ग्वालियर कार्यालय का भी आगरा कार्यालय में विलय कर अंचल कार्यालय बना दिया गया । ''क'' क्षेत्र में स्थित होने के कारण राजभाषा में कार्य करने एवं उसके विकास में योगदान देने की हमारी जिम्मेदारी बढ़ जाती है । जून 1993 में जब मैनें विभाग में नौकरी पाई तब से अब तक मैंने पाया कि आगरा कार्यालय ने हमेशा ही राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अग्रणी भूमिका निभाई है । आगरा कार्यालय को राजभाषा में कार्य करने एवं विशेष योगदान देने के कारण विगत कई वर्षों से नगर स्तर पर प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है तथा विकास की यात्रा यहीं नहीं रुकी । क्षेत्रीय स्तर पर भी आगरा कार्यालय को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुए हैं ।

पेसो में आगरा कार्यालय ने हमेशा से ही राजभाषा कार्य में योगदान दिया है चाहे वो तकनीकी शब्दों से सुसज्जित विभागीय शब्दावली हो या नागपुर कार्यालय द्वारा प्रेषित विभिन्न नियमों के हिंदी अनुवाद से संबंधित कार्य हो, आगरा कार्यालय ने हमेशा ही अपने कार्यालयाध्यक्ष महोदय के मार्गदर्शन में अग्रणी भूमिका निभाई है तथा राजभाषा के कार्य करने में हमेशा ही तत्पर रहा है। राजभाषा के प्रसार में कार्यालय द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक बुलेटिन ''मध्यांचल समाचार'' एवं वार्षिक गृह पत्रिका ''मध्यांचल दर्पण'' का भी विशेष योगदान है जिनमें हम समय-समय पर तकनीकी लेख एवं नियमों से सम्बन्धित जानकारी प्रकाशित करते हैं तथा वर्तमान में यह स्थान ''मध्यांचल दर्पण'' की ई-पत्रिका ने ले लिया है ।

हमारा संगठन तकनीकी संगठन है एवं देश के विकास में हम एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं । हमारे अधिकतर नियमों का हिंदी रूपांतरण हो चुका है तथा विभिन्न प्ररूपों का भी हम हिंदी रूपांतरण (द्विभाषीकरण) कर चुके हैं । परन्तु अभी भी बहुत कार्य करना बाकी है । हम अपने तकनीकी कार्य, नियमों एवं अन्य कार्यों को राजभाषा हिंदी में इस तरह प्रस्तुत करें कि वे आम जनमानस की समझ में आ सकें तथा वर्तमान में संगठन के कार्यों को ''पेपर लेस'' करने की प्रक्रिया में उन्हें आवेदन करने में कोई कठिनाई नहीं हो ।

कार्यालय में प्राप्त ई-मेल का जवाब हमें हिंदी में देना चाहिए । यहाँ हमें सरल हिंदी का प्रयोग करना चाहिए जैसे-पेट्रोल आदि शब्द (न कि उनका विशुद्ध हिंदी-वाहन आदि को चलाने में प्रयोग किया जाने वाला खनिज तेल)। सभी नियमों-प्ररूपों एवं उनके आवेदन से संबंधित सभी जानकारी हमारी वेबसाइट पर द्विभाषा में उपलब्ध होनी चाहिए (अधिकाँश उपलब्ध हैं लेकिन अभी बहुत बाकी हैं)। चूंकि आगरा कार्यालय स्वतंत्र ईकाई नहीं है एवं स्वतंत्र निर्णय नहीं ले सकता फिर भी पेसो के तकनीकी कार्य से संबंधित अधिकतर कार्य मुख्यालय की स्वीकृति से हिंदी में कर सकता है। हम समय-समय पर तकनीकी कार्यों से संबंधित हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन कर सकते हैं तथा उनमें हम आम जनमानस को भी शामिल कर सकते हैं ताकि उनको भी हमारे नियमों, प्ररूपों की समझ हो सके तथा वे सरकार की मंशा के अनुरूप राजभाषा में कार्य कर सकें एवं आत्मनिर्भर बन कर देश के विकास में सहयोग दे सकें । हमें राजभाषा के क्षेत्र में बहुत कार्य करना है ।

राजभाषा का कार्य अपार है तथा उसमें पूर्णता लाने में पेसो, आगरा कार्यालय अपना यथा सम्भव योगदान देता चला आ रहा है तभी तो जब राजभाषा के कार्य की बात होती है तो आगरा कार्यालय का नाम गर्व से लिया जाता है । यह विकास यात्रा यही नहीं रुकेगी । इसमें अपार संभावनाएं हैं । हमें निरंतर राजभाषा नियमों - उपनियमों एवं गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा निर्देशित शासनादेशों के अनुपालन में हमेशा अग्रणी रहते हुए राजभाषा हिंदी को उसके सिंहासन तक पहुँचाना है जहाँ सभी सरकारी कार्य पूर्ण रूप से हिंदी में हो तभी राजभाषा की विकास यात्रा को विराम मिलेगा ।

जय हिंद - जय हिंदी

वर्ष 2020 - 2021 में हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में

द्वितीय पुरस्कृत निबन्ध

विषय : पेसो, आगरा कार्यालय में राजभाषा कार्य की विकास यात्रा - योगदान एवं संभावनाएं

प्रतिभागी - श्री मदन मोहन गुप्ता, उच्च श्रेणी लिपिक

आगरा अंचल कार्यालय में राजभाषा हिंदी के विकास की यात्रा वास्तव में इसकी स्थापना वर्ष से ही अनवरत चली आ रही है। यह कार्यालय ब्रज क्षेत्र में आता है। ब्रज भूमि हिन्दी की हृदयस्थली के रूप में जानी जाती है। अतः आगरा कार्यालय में हिंदी का वर्चस्व प्रारंभ से ही रहा है। आगरा कार्यालय जो कि संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक का मध्यांचल कार्यालय है, पेसो (पेट्रोलियम और विस्फोटक सुरक्षा संगठन) के पांच सर्कल कार्यालयों में से एक है। मध्यांचल (सेंट्रल सर्कल) कार्यालय पहले नागपुर में था जिसे बाद में ग्वालियर में स्थानांतरित कर दिया गया था। आजादी के बाद लाहौर से स्थानांतरित किए जाने पर वर्ष 1947 में विस्फोटक विभाग का आगरा कार्यालय अस्तित्व में आया। 1981 में ग्वालियर कार्यालय को आगरा कार्यालय में विलय कर दिया गया था। आगरा अंचल जिसे मध्यांचल कहा जाता है, के क्षेत्राधिकार में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़ अर्थात कुल 04 राज्य आते हैं। वर्तमान में सेंट्रल सर्कल, आगरा कार्यालय से जुड़े 4 उप-अंचल कार्यालय - इलाहाबाद, भोपाल, देहरादून एवं रायपुर हैं। आगरा कार्यालय एवं उसके सभी उप-अंचल कार्यालय राजभाषा विभाग द्वारा हिन्दी के 'क" क्षेत्र (केटगरी-ए) के अन्तर्गत आते हैं।

टाइप राइटर के आने से पहले सभी अन्य कार्यालयों की तरह ही आगरा कार्यालय में समस्त प्रकार के कार्य हाथ से लिखकर ही किए जाते थे। उस समय पत्र व्यवहार, रिपोर्टिंग एवं अनुज्ञप्ति जारी करने सम्बन्धी कार्य बहुत कठिन होते थे क्योंकि उनको हाथ से लिखने के कारण शारीरिक श्रम अधिक लगता है एवं कुछ देर काम के पश्चात

ही थकावट महसूस होने लगती है। परन्तु उस समय कोई अन्य उपाय नहीं होने के कारण सभी सरकारी दस्तावेज हाथ से लिखकर ही जारी किए जाते थे। उस समय हाथ से लिखने के कुछ फायदे भी थे जैसे हैंडराइटिंग का अभ्यास हो जाता था और शुद्ध एवं स्वच्छ लिखने की आदत पड़ जाती थी। जब भी कोई दस्तावेज आदि लिखा जाता था तो यह ध्यान रखा जाता था कि वह इस तरह से लिखा जाए कि दूसरा व्यक्ति, जिसको यह जारी किया जा रहा है अथवा कोई तीसरा पक्ष उसको सही तरह से पढ़ सके और समझ सके। आगरा कार्यालय के पुराने हस्तलिखित दस्तावेज एवं नोटशीट आदि देखने से पता चलता है कि पहले इस कार्यालय में हिन्दी में कितना अधिक काम होता था एवं अधिकारिरयों / कर्मचारियों की लिखित भाषा व शैली कितनी शुद्ध एवं स्पष्ट होती थी।

आगरा कार्यालय में हिन्दी के टाइपराइटर आ जाने के बाद से समस्त कार्य जैसे पत्र लेखन, स्टेटमेंट, रिपोर्ट एवं बिल आदि टाइप करके तैयार किए जाने लगे। इस अवधि में जो कर्मचारी नए नियुक्त होते थे उनको अक्सर टाइपिंग का ही कार्य दिया जाता था । टाइपिंग करने वाले कर्मचारी को बहुत ही मेहनत से पूरे दिन टाइपिंग का कार्य करना होता था क्योंकि बहुत बड़ी संख्या में पत्र रिपोर्ट्स दस्तावेज आदि टाइप किए जाते थे ।

उस समय सभी पत्र आदि हिन्दी में केवल टाइपिंग किए हुए ही जारी किए जाते थे। कार्य करने की प्रक्रिया यह थी कि पहले डीलिंग स्टाफ पत्र दस्तावेज आदि ड्राफ्ट के रूप में तैयार करते थे। उसके बाद वे उसे अधिकारियों के पास अनुमोदन के लिए भेजते थे, जब ड्राफ्ट अनुमोदित होकर आ जाता था तो उसे टाइपिंग सेक्शन में भेजा जाता था और वहां पर उसे टाइप किया जाता था। इस प्रकार उस समय हाथ से लिखने और टाइपिंग करने दोनों का काम होता था अतः काम की मात्रा बढ़ गई थी।

टाइपराइटर के माध्यम से दस्तावेज तैयार करते समय बहुत सावधानी से करने की जरूरत होती थी क्योंकि यदि एक बार गलत स्ट्रोक पड़ जाने एवं गलत टाइप हो जाने पर उसे पूर्ण रूप से सुधारने का कोई उपाय नहीं होता था। बहुत बार व्हाइटनर लगाकर सुधार किया जाता था लेकिन ऐसा करने से दस्तावेज की प्रामाणिकता संदिग्ध हो जाती थी। जो दस्तावेज बहुत महत्वपूर्ण होते थे उनमें व्हाइटनर का प्रयोग वर्जित होता था और कहीं भी जरा सी भी गलती हो जाने पर पूरा पत्र रिपोर्ट आदि दोबारा से टाइप करना होता था। दोबारा टाइप करना बहुत ही बुरा लगता था एवं एक काम करने में दोगुना श्रम एवं समय लग जाता था। लेकिन एक बात तो थी कि इस अवधि में हिंदी के कार्य की प्रगति बहुत हुई क्योंकि सभी को सावधानीपूर्वक एवं सही-सही हिंदी लिखने, ड्राफ्ट बनाने और उसको टाइप करने की आदत डालनी आवश्यक होती थी अन्यथा कहीं पर जरा सी चूक होने पर दस्तावेज को दोबारा टाइप करना होता था और कोई भी नहीं चाहता था कि ऐसा करना पड़े। इसलिए जब हम लोग टाइप का काम करते थे तो हमारा आदर्श वाक्य था कि - 'सावधानी हटी, दुर्घटना घटी" । लेकिन धीरे-धीरे आदत और अभ्यास होता गया तथा गलतियों की गुंजाईश कम होती गई। कार्य की मात्रा अधिक होते हुए भी हिन्दी अपने प्रगति के पथ पर चलती रही तथा इस कालखण्ड में हिंदी का अभूतपूर्व विकास हुआ।

उसके बाद कंप्यूटर का युग आया। कम्प्यूटर के आने से कार्यालय की कार्य प्रणाली में आमूल-चूल परिवर्तन आ गया। कार्यालय के पत्र रिपोर्ट आदि जो पहले टाइपिंग के माध्यम से तैयार किए जाते थे वह अब कंप्यूटर के माध्यम से तैयार होने लगे लेकिन इसमें केवल यह आसानी हो गई कि कंप्यूटर में पहले से जारी किया गया पुराना रिकॉर्ड सुरक्षित रहता है जिसे सुधार कर अथवा संशोधन करके नया पत्र डॉक्यूमेंट आदि तैयार किया जा सकता था इससे समय और श्रम की बचत होती थी साथ ही पुराना रिकॉर्ड देखने से काम में भी आसानी हो जाती थी। कम्पूटर के युग में हिंदी के कार्य में बहुत प्रगति हुई और कार्य करने की क्षमता भी पहले से बढ़ गई।

जब कंप्यूटर शुरू में आया तो वह केवल टाइपराइटर की तरह ही प्रयोग में लाया जाता था क्योंकि उस समय न तो लीज लाइन थी और न ही इंटरनेट था। कम्प्यूटर पर शुरुआत में केवल अंग्रेजी में ही काम हो सकता था। कम्प्यूटर के आने के तुरन्त बाद हिन्दी के काम में थोड़ी रुकावट आई थी परन्तु चूंकि उस समय टाइपराटर और कम्प्यूटर दोनों ही थे, अत: पत्र व्यवहार मुख्यत: हिन्दी में टाइपराइटर के माध्यम से ही किया जाता रहा। कुछ समय बाद कम्प्यूटर पर हिन्दी कृतिदेव नाम से फोण्ट उपलब्ध हो गया और उसके आने से सभी पत्राचार आदि हिन्दी में ही कम्प्यूटर के माध्यम से किया जाना संभव हो गया। अब हिन्दी के साथ-साथ लगभग सभी भारतीय भाषाओं में यूनीकोड फोण्ट आ चुके हैं। अत: अब आगरा कार्यालय में हिन्दी का काम कम्यूटर पर बहुत ही आसानी से किया जाने लगा है।

जब कंप्यूटर पर अनुज्ञप्ति जारी करने संबंधी मॉड्यूल एनआईसी द्वारा विकसित कर दिया गया तो वह केवल अंग्रेजी में ही था और बहुत समय तक यह मॉड्यूल केवल अंग्रेजी में ही रहा। इस कारण से अनुज्ञप्तियों को हिंदी में जारी करने में समस्या होने लगी और राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के प्रावधान का पालन करना चुनौतीपूर्ण हो गया लेकिन आगरा कार्यालय का हिंदी के प्रति जो समर्पण, जोश और जज्बा है उसके चलते आगरा कार्यालय में इसका भी हल निकाल लिया गया और यहां कंप्यूटर के माध्यम से जारी की गई अनुज्ञप्ति एवं आवरण पृष्ठ का प्रिंट निकाल कर उसके जैसे ही हूबहू अनुज्ञप्ति एवं आवरण को हाथ से लिखकर उसके साथ लगाने का बहुत बड़ा कार्य किया गया। आगरा कार्यालय के इस भागीरथ प्रयास से न केवल राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का अनुपालन सुनिश्चित हुआ बल्कि हिंदी की प्रगति का एक अनोखा कीर्तिमान भी आगरा कार्यालय द्वारा स्थापित किया गया। इस दौरान कार्यालय में सभी फाइलों को भी द्विभाषी किया गया और उन पर फाइल संख्या हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में उल्लिखित की गई। धारा 3(3) के अनुपालन में कार्यालय में सभी कार्यालय आदेश परिपत्र आदि भी आवश्यक रूप से द्विभाषी रूप में जारी किए गए।

आगरा कार्यालय ने राजभाषा हिन्दी के क्षेत्र में बड़े-बड़े कीर्तिमान स्थापित किए हैं। आगरा शहर में पेसो कार्यालय ने हमेशा से राजभाषा हिन्दी का परचम बुलन्द रखा है। आगरा पेसो कार्यालय को नराकास आगरा द्वारा अनेक बार हिन्दी के उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मानित किया जाता रहा है। नराकास द्वारा पूर्व में नगर में हिन्दी के सर्वोत्कृष्ट कार्य हेतु प्रथम पुरस्कार के स्मारक चिह्न के रूप में प्रदान की जाने वाली ''चल वैजन्ती'' वर्षों तक आगरा कार्यालय के कार्यालयाध्यक्ष के कक्ष की शोभा बढ़ाती रही है। । पेसो आगरा कार्यालय को नगर एवं क्षेत्रीय स्तर पर कई पुरस्कार प्रदान किए गए हैं।

कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, मध्यांचल, आगरा को वर्ष 2010-2011 के लिए उत्तर क्षेत्र-2 (उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड) में केन्द्र सरकार के समस्त कार्यालयों में प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया था। इस सम्बन्ध में उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार में आयोजित समारोह में पुरस्कार स्वरूप आगरा कार्यालय को एक शील्ड प्रदान की गई साथ ही संघ की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए कार्यालय के सराहनीय योगदान की प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

इस कार्यालय को विगत चार वर्षो में नगर स्तर पर तीन बार प्रथम तथा एक बार द्वितीय पुरस्कार मिलता रहा है। विशेष उपलब्धि के रूप में इस कार्यालय को क्षेत्रीय स्तर पर उत्तर क्षेत्र-2 में स्थित केन्द्र सरकार के समस्त कार्यालयों में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

वर्ष 2017-2018 में भी राजभाषा के प्रगामी प्रयोग एवं कार्यान्वयन के लिए कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, मध्यांचल, आगरा को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रथम पुरस्कार स्वरूप कार्यालय को शील्ड (चल वैजन्ती) प्रदान की गई।

वर्ष 2019 में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, आगरा की 75वीं छमाही बैठक में वर्ष 2018-19 हेतु राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग एवं कार्यान्वयन में पेट्रोलियम एवं विस्फोटक सुरक्षा संगठन को आगरा नगर स्थित समस्त केन्द्र सरकार के कार्यालयों में प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया एवं कार्यालय प्रमुख डॉ. ए.पी.सिंह, उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक द्वारा पुरस्कार प्राप्त किया।

वर्ष 2014 में चण्डीगढ़ में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार सम्मेलन में कार्यालय की ओर से तत्कालीन राजभाषा अधिकारी ने मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल श्री शिवराज पाटिल के कर कमलों से उत्तर क्षेत्र-2 (उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड) में केंद्र सरकार के समस्त कार्यालयों में राजभाषा में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए कार्यालय को प्रदत्त पुरस्कार प्राप्त किया ।

राजभाषा हिन्दी के क्षेत्र में अपने अविस्मरणीय योगदान के बाद आज भी आगरा कायार्लय रुका नहीं है न ही उसकी गति मंद हुई है बल्कि आज वो पहले से भी अधिक उत्साह, उमंग व ऊर्जा के साथ राजभाषा हिन्दी को नई ऊंचाई देने हेतु सदैव तत्पर है। आगरा कार्यालय न केवल आगरा नगर में हिन्दी का झण्डा बुलन्द किए हुए है वह अपने उपांचल कार्यालयों का भी नेतृत्व कर रहा है। आशा है कि आगे आने वाले समय में भी आगरा कार्यालय हमेशा न केवल आगरा नगर में बल्कि अपने उपांचल कार्यालयों के साथ ही सम्पूर्ण संगठन में राजभाषा हिन्दी का सिरमौर व नेतृत्वकर्ता बना रहेगा।

वर्ष 2020 - 2021 में हिंदी पखवाड़ा के अन्तर्गत आयोजित चित्र देखकर कहानी लेखन प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कृत कहानी

प्रतिभागी – श्री मदन मोहन गुप्ता, उच्च श्रेणी लिपिक

बहुत समय पहले की बात है, ग्वालपुर गांव में रोज की तरह ही यह दिन भी आम गुज़र रहा था । किसान खेती-बाड़ी और महिलाएं घर के कामकाज में व्यस्त थीं । मानसून का मौसम होने के बारण बारिश की हल्की रिमझिम हो रही थी । गांव के बच्चे इस मौसम का आनन्द ले रहे थे ।

अचानक बहुत तेज आवाज के साथ गांव पर पानी का सैलाब टूट पड़ा । गांव में बाढ़ आ गई । पेड़-पौधे से लेकर बड़े-बड़े वृक्ष तक पानी में बह गए । कई घर उजड़ गए, परिवारीजन अपनों से दूर हो गए । पालतू जानवर पानी में बह गए । पानी के ऐसे हमले की किसी ने भी कल्पना भी नहीं की थी । कुछ लाग पेड़ के सहारे तो कुछ घरों के ऊपर खतरनाक रूप से फँस गए थे ।

कुछ समय बाद जब बाढ़ की गति थोड़ी धीमी पड़ी तो गांव वालों ने एक नाव तैयार की जिससे बाढ़ में फँसे लोगों को बचाया जा सके। कुछ लोग अपने बचे-खुचे सामान के साथ पैदल ही सुरक्षित स्थान की ओर चल दिए और जो नहीं जा सकते थे, उन्होंने मदद का इंतजार किया । गांव वालों के कच्चे घर, खाना-पीना, कपड़े आदि सब बाढ़ में बह चुके थे। अब यदि उनके पास कुछ बचा था तो उनकी हिम्मत और एक दूसरे का सहारा ही थे। धीरे-धीरे लोगों ने आपसी मदद से बाढ़ में फँसे लगभग सभी लोगों को सुरक्षित निकाल लिया । सरकार की तरफ से भी समय से मदद मिल गई और खाना पीना भी सभी लोगों को लगातार पहुँचाने का प्रयास किया । इस प्रकार सामूहिक प्रयास, लोगों की हिम्मत और हौसले के चलते ग्वालपुर गांव इस प्राकृतिक आपदा से उबरने में कामयाब हुआ ।

इस घटना से हमें यह सीख मिलती है कि चाहे कितनी भी बड़ी मुसीबत क्यों न आ जाए, हमें कभी भी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए और सदा एक दूसरे की मदद करनी चाहिए ।

वर्ष 2020 - 2021 में हिंदी पखवाड़ा के अन्तर्गत आयोजित चित्र देखकर कहानी लेखन प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कृत कहानी

प्रतिभागी – श्री प्रमोद कुमार शर्मा, उच्च श्रेणी लिपिक

कई दिनों से मूसलाधार बारिश रुकने का नाम नहीं ले रही थी । उसके गाँव में भी पानी भरने लगा था और वह खेत पर काम करने भी नहीं जा पा रहा था । कल रात टीवी पर, उसके जिले से आने वाली खबरों ने उसे बहुत बेचैन कर दिया । उसके गाँव में भी बाढ़ का प्रकोप होने वाला था, यह जानकर वह सिहर गया । सुबह तक पूरा गाँव बाढ़ के पानी से घिर चुका था । खेत-खलिहान, बस्ती चारों तरफ पानी ही पानी था । जिंदगी बचाने के लिए सभी यथा सम्भव मशक्कत कर रहे थे । कच्चे पक्के घर व झोपड़ियाँ सभी लगभग पानी में डूबने ही वाले हैं । कल ही उसकी रामदास भाई से बात हुई थी, लोग गाँव छोड़कर जा रहे हैं । वह भी अब गाँव छोड़कर जाने की सोचने लगा । जैसे तैसे उसने एक नाव की जुगाड़ की तथा उस पर जरूरत का सामान लादकर बच्चों सहित वो किसी सुरक्षित स्थान की तलाश में चल पड़ा । रास्ते में कई लोग छोटे बच्चों को गोद में लेकर तथा जरूरत का सामान सिर पर लेकर पैदल ही गाँव छोड़कर जाते हुए दिखे । कुछ लोग झोपड़ीनुमा मकान की छत पर सामान रखकर स्वयं को व सामान को बचाने की कोशिश कर रहे हैं ।

उसके अन्दर एक कम्पन सा पैदा हुआ और कई वर्ष पूर्व का मंजर उसे याद आ गया । बाढ़ में उसका सब कुछ बर्बाद हो गया था । घर के साथ उसके मवेशी भी बाढ़ की भेंट चढ़ गए थे । वह बार-बार असमान की तरफ देखता और मन ही मन प्रार्थना कर रहा था - हे भगवान इस बार रहम करना, गाँव को बाढ़ से बचा लो ।

क्यूँकि उजाले को सराह पाने के लिए, अंधेरे का होना बेहद ज़रूरी है

सुश्री सुप्रिया गांगुली
पुत्री श्रीमती श्रावणी गांगुली
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

हम चाँद को महीने में, सिर्फ एक दफा पूरा देखते हैं
फिर अगले ही दिन से वो वापस घटने लगता है,
और घटता रहता है, फिर एक महीने तक,
फिर एक दफा पूरा होने के लिए

क्या कभी हम उसके इस रवैये से नाख़ुश हुए हैं ?
हम तो बल्कि इस इंतज़ार
में रहते हैं कि कब चाँद एक दफा फिर पूरा दिखेगा ।

हम उसके घट जाने का ग़म नहीं करते,
बस उसके वापस पूरा होने का इंतजार करते हैं

अब सोच के देखिये कि क्या
ऐसा ख़ुद के साथ भी किया जा सकता है ?
किया जा सकता है, है ना ?

तो फिर हम ऐसा करते क्यूँ नहीं हैं ?
क्यूँ हम ख़ुद को घटता हुआ देख के या महसूस कर के ऐसा सोच लेते हैं कि
हम फिर कभी पूरे हो ही नहीं पाएँगे ?
क्यूँ हम दफा-दफा अपनी ही काबिलियत पर शक़ करने लगते हैं ?

महीने में एक दिन जहाँ चाँद पूरा होता है,
वहीं एक दिन हर महीने में ऐसा भी आता है
जब चाँद दिखता ही नहीं हैं, एकदम गायब हो जाता है
और उसके ऐसा करने से हम उस से
ख़फा तो नहीं हो जाते ना ?

जिस दिन चाँद की रोशनी नहीं होती,
उस दिन हम ख़ुद से अपने लिए उजाले
का बंदोबस्त कर लेते हैं क्यूँकि अंधेरा,
कैसा और कितना भी हो, हमें ख़लता ही है ।

तो जैसे हम चाँद को उसकी रोशनी बिखेरने
और वापस पूरा होता देखने का शौक से इंतज़ार करते हैं,
वैसा इंतज़ार हम ख़ुद को बिखर जाने के बाद, जुड़ते हुए और फिर
एक दफा पूरा होते हुए देखने का क्यूँ नहीं करते ?
क्यूँ नहीं कर पाते ? क्यूँ नहीं करना चाहते ?

क्यूँकि अगर हम कभी अधूरा महसूस नहीं करेंगे,
तो हमें पूरा होने का एहसास कैसे हो पाएगा
और हम उस एहसास की एहमियत कैसे समझेंगे ?
क्यूँकि अगर हम अंधेरे से रूबरू नहीं होंगे,
तो उजाले को कैसे पहचानेंगे ?
क्यूँकि अगर हम रोज़ थोड़ा-थोड़ा नहीं निखरेंगे,
तो एक दिन पूरा कैसे दिख पाएँगे ?
अगर चाँद ऐसा कर के भी खूबसूरत है,
तो हम क्यूँ ख़ुद को उस से ज़रा भी कम समझते हैं ?

क्यूँकि उजाले को सराह पाने के लिए,
अंधेरे का होना बेहद ज़रूरी है |

अच्छा लगता है किसी का "काश" होना

श्रावणी गांगुली
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, आगरा

प्रत्येक मानव जीवन में अक्सर ''काश'' की एक स्थिति आती है जब उसे लगता है कि काश मैं ऐसा कर पाता / पाती, ''काश'' मैं वहाँ जा पाता / पाती, ''काश'' वो मेरा भाई होता / बहन होती, ''काश'' मेरे दोस्त इस तरह के होते, यहाँ तक कि ''काश'' के रूप में मन, प्रेमी-प्रेमिका की कल्पना करने से भी नहीं चूकता । मन में उठती ये ''काश'' की हिलोरें कभी-कभी एकांत में स्वयं पर ही हंसने का कारण बनती हैं तो कभी-कभी अत्यन्त वेदना का कारण भी बन जाती हैं जिससे स्वयं को उबार पाना मुश्किल सा प्रतीत होने लगता है । निर्जीव वस्तुओं के लिए मन में ''काश'' की प्रबलता हो तो उन्हें पाने का प्रयास किया जा सकता है परन्तु कई बार ''काश'' के साथ जुड़े मानवीय संबंध को हासिल कर पाना सम्भव नहीं हो पाता है परन्तु उसको न पाकर मन को समझा पाना भी मुश्किल सा प्रतीत होता है । ''काश'' जनित यह मानवीय संवेदना मन को किसी भी उम्र में उद्वेलित कर सकती है और उसे, सम्बन्धित व्यक्ति के समक्ष जाहिर करने के लिए कई बार बहुत हिम्मत चाहिए । ऐसे में यदि हमें पता चले कि हम किसी भी रूप में किसी के ''काश'' थे / हैं तो हमें अवश्य ही उस शख्स की भावनाओं का सम्मान करना चाहिए न कि उपहास या मजाक बनाना चाहिए । इस विचार को काव्य रूप में प्रस्तुत करती हुई एक रचना -

ये जीवन कैसा होता, अगर ये मेरी ''.....'' होती ।
वो केवल साथ न होती, संग सपने भी पिरोती ।।
किसी की इन कल्पनाओं का, निस्सीम आकाश होना ।
अच्छा लगता है, किसी का **"काश"** होना ।।

उसका आलिंगन करके, मन ये आह्लादित होता ।
वो होती रश्मि पुंज सी, घर सदा रोशन रहता ।
हृदय को आलोकित करता, उसका प्रकाश होना ।
अच्छा लगता है, किसी का **"काश"** होना ।।

जब हृदय व्यथित होता, उसे मैं साथ ही पाता ।
अगर दारुण दुख भी होता, उसके काँधे सिर रख - रोता ।।
किसी की वेदनाओं का यूँ, सुखद अहसास होना ।
अच्छा लगता है, किसी का **"काश"** होना ।।

जिस रूप मुझे पाया, उसने निज कल्पनाओं में ।
डूबा - उतरा ले संग, वो अपनी भावनाओं में ।।
प्रतिपल मैं मूर्त हूँ साथ, उसको आभास होना ।
अच्छा लगता है, किसी का **"काश"** होना ।।

'गर जान सकें हम कभी, किसी के **"काश"** हैं हम ।
जितना भी संभव हो, यूँ उसका साथ दे हम ।।
उस साथ से ही वो भूल सके, निराश होना ।
अच्छा लगता है, किसी का **"काश"** होना ।।

प्रयागराज कार्यालय में वर्ष 2020 - 2021 में हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में - प्रथम पुरस्कृत निबन्ध

विषय : नशीले पदार्थों का दुर्व्यसन और उसके प्रभाव

प्रतिभागी - श्री दिनेश कुमार शुक्ल, आशुलिपिक ग्रेड- ।।

<u>प्रस्तावना -</u> मादक द्रव्य दुरुपयोग एक गंभीर चिंता बनकर उभरा है जो देश के भौतिक, सामाजिक, आर्थिक दशा को बुरी तरह से प्रभावित कर रहा है। आधुनिक जीवन में तनाव और परेशानियों ने व्यक्तियों को मादक द्रव्य दुरुपयोग की समस्या से ग्रसित होने के लिए अधिक असुरक्षित बना दिया है। मादक द्रव्य का सेवन करने की आदत न केवल इसके आदी व्यक्ति को प्रभावित करती है अपितु परिवार और समाज को भी बड़े पैमाने पर नुकसान पहुँचाती है। नशीले पदार्थ के दुर्व्यसन का बहुत ही बुरा प्रभाव होता है । इससे बचाव के प्रति समाज के लोगों को शुरू से ध्यान देना आवश्यक है।

संयुक्त राष्ट्र संघ मादक द्रव्य और अपराध (यू.एन.औ.डी.सी) और सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय द्वारा वर्ष 2001 में किये गये सर्वेक्षण में यह अनुमान लगाया गया कि लगभग 73.2 करोड़ लोग शराब और मादक द्रव्य का सेवन करते थे और उसमें से लगभग 62.5 करोड़ लोग भांग, अफीम और शराब का सेवन करते थे जो कि आज बदलकर लगभग 1.5 गुणा हो गया।

<u>व्यसन का प्रभाव</u> - व्यसनकारी पदार्थ ऐसे रसायन होते है जो कि शरीर के कामकाज को प्रभावित करते हैं। वाइज स्वान फाउन्डेशन के अनुसार कोई भी लत अपने शिकार के साथ-साथ आस-पास के लोगों को भी प्रभावित करती है। एक व्यक्ति जो किसी लत का आदी है, वह केवल इससे मिलने वाले मजे पर ध्यान केन्द्रित रखता है। इससे वह अपनी पेशेवर और व्यक्तिगत जिम्मेदारियों से दूर होने लगता है और उसमें परिवार और दोस्तों से जी चुराने की संभावना रहती है क्योंकि वह केवल अपनी लत पर ध्यान लगाए रहना चाहता है और यही लत धीरे-धीरे उसके काम को और घनिष्ठ संबंधो को भी प्रभावित करती है।

अल्कोहल और तम्बाकू उपयोगकर्ताओं को कैंसर और अन्य गैर संक्रमणीय बीमारियाँ होने का अधिक जोखिम होता है। इसी विषाक्तता का जोखिम तब और बढ़ जाता है जब कोई व्यक्ति शराब और तम्बाकू दोनों का आदी हो जाता है।

नशे की वजह से जोखिम लेने का व्यवहार - इसके कारण मनुष्य में हिसंक व्यवहार, लापरवाह ड्राइविंग या यौन व्यवहार शामिल हो सकता है जो घरेलू हिंसा, दुर्घटनाओं और शारीरिक क्षति का कारण बनती है। इंजेक्शन से नशीली दवाएँ लेने के मामले मे घावों मे सड़न, एचआईवी/ एड्स जैसी अन्य संक्रमित बीमारियाँ होने की सम्भावना बढ़ जाती है। मादक पदार्थ के जुनून के कारण सामाजिक अलगाव या अलग-थलग होने की सम्भावना ज्यादा होती है।

<u>कानूनी समस्या</u> - इसके लत से खराब निर्णय और जोखिम लेने वाले व्यवहार के कारण या अगली खुराक की व्यवस्था के लिए अवैध साधन तलाशने के कारण यह समस्या बढ़ती जाती है।

नशे की आदत वाले व्यक्ति की पहचान - नशीले पदार्थ के सेवन की निम्न संकेतक होते हैं जिससे हम समझ सकते हैं कि व्यक्ति नशीले पदार्थ का आदी है।
शारीरिक संकेतक - लाल आँख, नींद के पैटर्न मे परिवर्तन, अचानक वजन घटना या बढ़ना, समन्वय में कमी, आकस्मिक चोटों में वृद्धि ।

<u>व्यवहारिक संकेतक</u>- गतिविधियों में रुचि कम लेना, घर या स्कूल या काम की जिम्मेदारियों की उपेक्षा, वित्तीय समस्याओं से घिरना, लड़ना, झगड़ना, संदिग्ध चीजें करना, अपनी निजता पर जोर देना, दरवाजे को बंद करके काम करना, परिवार या दोस्तों से बातचीत करने में परहेज करना।

<u>मनोवैज्ञानिक संकेतक</u>- व्यक्ति के परिवर्तन, चिड़चिड़ाहट, तनाव ग्रस्त, बेचैन मनोदशा का अचानक बदलना, चिंता, मानसिक उन्माद, प्रेरणा की कमी, एकाग्रता के कमी।

<u>पलटाव के लक्षण(विद्ड्रायल सिंम्पटम्स</u>) - पलटाव के लक्षण शारीरिक और व्यावहारिक परिवर्तन होते है। यह तब प्रकट होता है जब नशीले पदार्थ का आदी व्यक्ति उसका उपभोग करना बंद कर देता है। पलटाव के लक्षण दो प्रकार के होते हैं -

1. शारीरिक लक्षण - सामान्य शारीरिक पलटाव के लक्षण पदार्थो के दुरूपयोग या लत के उपचार के आम तौर पर दवा शामिल होती है, जो रोगी को नके विकासी के लक्षणो को प्रबंधन करने मे मदद कर सकती है ।
2. भावनात्मक लक्षण - एक व्यक्ति जो किसी मादक पदार्थ का आदी हो जाता है, वह वापसी के लक्षणो से डरता है और अगली खुराक न मिलने के विचार मात्र से डर सकता है क्योंकि लत ने उसकी उत्तेजना, भोजन, पेय या नींद आदि की सर्वोच्च प्राथमिकता को बदल दिया है ।

<u>व्यसन का निदान -</u> नशीले पदार्थों के आदी व्यक्तियों को इससे बचाने के लिए सरकार की तरफ से कई उपाय किए गए हैं जिसमें वह जगह-जगह नशा उन्मूलन केन्द्र खुलवाए गए हैं। जहाँ पर जाकर व्यक्ति अपनी लत से छुटकारा पाकर देश, समाज तथा परिवार को बचा सकता है।

<u>उपसंहार -</u> उपरोक्त लेख के उपरांत मैं यह कह सकता हूँ कि नशीले पदार्थ का जीवन में बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ता है तथा इससे बचने के लिए परिवार को शुरु से ही अपने बच्चों पर ध्यान देना चाहिए तथा ऐसे दुर्व्यसनो से बचाने का प्रयास करते रहना चाहिए।

प्रयागराज कार्यालय में वर्ष 2020 - 2021 में हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित
निबन्ध प्रतियोगिता में - द्वितीय पुरस्कृत निबन्ध
विषय : नशीले पदार्थों का दुर्व्यसन और उसके प्रभाव
प्रतिभागी - श्री कृष्ण कुमार केसरवानी, सहायक

वर्तमान समय में मनुष्य द्वारा नशीले पदार्थों के दुर्व्यसन के अनेक कारण हो सकते है। ज्यादातर लोग इसका सेवन प्रारम्भ में आनन्द के लिए करते हैं । इनके सेवन से प्रारम्भ में तो लोगों को अच्छा प्रतीत होता है लेकिन बाद में धीरे-धीरे वह उसका आदी हो जाता है और उसके बार-बार इस्तेमाल करने के लिए विवश हो जाता है। कुछ लोग अत्यधिक चिन्ता, अवसाद, क्रोध, बोरियत व अनिद्रा तथा शारीरिक पीड़ा के कारण भी नशीले पदार्थो को सेवन करते हैं। कुछ लोग दोस्तों के दबाव के आकर भी इसका सेवन सीख लेते है। कुछ साधू संन्यासी आध्यात्म की प्राप्ति के लिए भी इसका प्रयोग करते है।

मादक पदार्थो का प्रभाव उसकी मात्रा एवं उसके समय अन्तराल पर आधारित रहती है। लम्बे समय तक इसके सेवन करने के बाद चाहकर भी कोई व्यक्ति इसके व्यसन को एकदम से नही छोड़ पाता है। यदि कोई व्यक्ति इसके प्रयोग को एकदम से छोड़ पाता है तो उसे अनेक प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक कष्ट उत्पन्न हो जाते हैं जो अत्यन्त ही असहनीय और कष्टकारक होते हैं जो इसके दोबारा सेवन से ही ठीक हो पाते हैं।

नशीले पदार्थो का व्यक्ति के स्वास्थ्य पर प्रभाव - नशीले पदार्थो का मानव शरीर पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। इससे अनेक बीमारियाँ उत्पन्न हो जाती है और मनुष्य अनेक गम्भीर बीमारियों से ग्रसित हो जाता है जैसे तम्बाकू खाने से मुँह का कैंसर हो जाता है एवं फेफड़े से सम्बन्धित रोग हो जाते हैं । शराब पीने से लीवर व पेट सम्बन्धित अनेक बीमारियाँ हो जाती हैं। इसमें आदमी की याददाश्त भी जा सकती है। शराब के सेवन से उच्च रक्त चाप, चिड़चिड़ापन, गुस्सा, बेचैनी जैसी अनेक बीमारियाँ हो जाती हैं।

<u>आर्थिक स्थिति पर प्रभाव</u>- नशीले पदार्थों के सेवन से व्यक्ति की आर्थिक स्थिति पर बहुत ही अधिक प्रभाव पड़ता है। जिससे उसके खर्च में वृद्धि हो जाती है जिसे, व्यसन की आदत पड़ने के कारण वह चाहकर भी कम नही कर सकता है जिसके कारण उसके अन्य खर्चों, उसके अन्य उत्तरदायित्वों के निर्वहन पर बहुत अधिक बुरा प्रभाव पड़ता है । उसे उधार लेना पड़ता है, उधार चुकाने के लिए धीरे-धीरे उसके घर की सभी सम्पत्तियाँ या तो बिक जाती है या उसे गिरवी रखकर उससे प्राप्त पैसों से पुराना उधार चुकाता है। घर के सदस्यों की आर्थिक जरूरतें पूरी न हो पाने के कारण घर मे रोज कलह, लड़ाई-झगड़े होते रहते हैं जिससे पूरा घर परेशान रहता है।

<u>सामाजिक प्रभाव</u>- नशीले पदार्थों का सेवन करने वाले व्यक्ति को समाज में भी बहुत बुरी दृष्टि से देखा जाता है । लोग अपने बच्चों को उनके सम्पर्क मे आने से बचाने का प्रयास करते है। नशीले पदार्थों का सेवन करने वाला व्यक्ति बहुत ही अधिक चिड़चिड़े स्वभाव का हो जाता है जिसे समाज के अन्य लोगों की कोई चिन्ता नही होती है। उसका अपने मस्तिष्क पर से नियन्त्रण भी कमजोर हो जाता है वह व्यक्ति कभी भी किसी को कुछ भी बोल देता है जिसके कारण लोग उससे एक सामाजिक और व्यवहारिक दूरी बनाने लगते हैं। धीरे धीरे उनका सामाजिक बहिष्कार होने लगता है और समाज में उनका सम्मान खत्म हो जाता है।

<u>बचने के उपाय</u> - हमें नशीले पदार्थों के सेवन से बचने का प्रयास करना चाहिये। जो भी व्यक्ति इसका आदी हो गया है वह एकदम से या एक ही बार में इसे नही छोड़ सकता है । उसे धीरे-धीरे इसे छोड़ने का प्रयास करना चाहिये। इसके लिए प्रबल इच्छा शक्ति और दृढ़ संकल्प होना अति आवश्यक है। इसके बल पर ही इसे इससे मुक्ति मिल सकती है। यह असम्भव नहीं है लेकिन इससे बचने के लिए हमे निरन्तर प्रयत्नशील होना चाहिए और दूसरे को भी इस व्यसन को छोड़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

प्रयागराज कार्यालय में वर्ष 2020 - 2021 में हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित
निबन्ध प्रतियोगिता में - तृतीय पुरस्कृत निबन्ध
विषय : नशीले पदार्थों का दुर्व्यसन और उसके प्रभाव
प्रतिभागी - श्री विजय कुमार गुप्ता, अवर श्रेणी लिपिक

नशीले पदार्थों का सेवन आज के सभ्य और उन्नत समाज के लिए सबसे भयानक अभिशाप बन गया है। एक अनुमान के अनुसार लगभग 80 प्रतिशत से अधिक वयस्क आबादी किसी न किसी प्रकार के नशीले पदार्थों से सेवन की अभ्यस्त बन चुकी है और यह प्रतिशत तो तब है जब समाज मे इनके प्रति इतनी जागरूकता है और लोगों को इनके दुष्परिणामों के विषय मे जानकारी भी है। वयस्क आबादी की अपेक्षा युवा पीढ़ी इनके जाल मे शीघ्र फँस जाती है। शायद यही कारण है कि आज विश्व विद्यालय और कालेजों के प्रांगणो मे भी इन नशीले पदार्थों ने अपने पैर पसार लिये हैं।

अक्सर नशीले पदार्थों के सेवन की शुरुआत शराब या तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट, खैनी, तम्बाकू युक्त) गुटके आदि के रूप में होती है जो बाद मे अधिक काल्पनिक आनन्द के लिए चरस, गांजा, भांग, हेरोइन, कोकीन कुछ दर्द निवारक, अवसाद व उत्तेजना कारक औषधियों के सेवन तक पहुंच जाती है। अतः चाहे किसी भी नशीले पदार्थो का सेवन किया जाए और चाहे किसी भी कारण से क्यों न किया जाए उसकी प्रतिक्रिया शरीर पर अवश्य होगी और वह भी दुष्परिणाम युक्त।

कम मात्रा मे शराब शरीर पर उत्तेजक प्रभाव डालती है। मुँह, कण्ठनालिका और आमाशय आदि मे इसके कारण गरमाहट का अहसास पैदा होता है। मुँह में लार व आमाशय मे जठर रस का स्त्राव भी बढ़ता है। यह हृदय पर भी प्रभाव डालकर हृदय की धमनी को चौड़ा कर हृदय को रक्त की आपूर्ति में सहायक बनाती है।

शराब का सेवन मुंह के द्वारा किया जाता है पर यह नाक के रास्ते फेफड़ों तक पहुंच कर अपना हल्का प्रभाव दिखा सकती है। शराब पीने के तुरंत बाद आमाशय, छोटी आँत मे पहुँचते ही बिना किसी खास परिवर्तन के

सीधे (C2H2OH को) शराब के नाम पर विभिन्न सान्द्रता के रूप मे सेवन किया जाता है जो तेजी से अवशोषित होकर रक्त मे मिलने लगती है। 20 प्रतिशत शराब का अवशोषण तो आमाशय मे ही सम्पन्न हो जाता है और लगभग 10 प्रतिशत शराब शरीर मे आक्सीकृत होकर CO2 और H2O में बदल जाती है एवं कम मात्रा मे ऊर्जा का उत्पादन करती है।

नशीले पदार्थो के बढ़ते सेवन के मद्देनजर 1998 मे राष्ट्रीय मादक द्रव्य निवारण(NCDAP) की स्थापना कर मादक द्रव्य ब्यूरो को एक व्यापक भूमिका दी गयी। इसे पूरे देश मे सेवाओं देने का विस्तृत कार्य करने का आदेश दिया गया।

NDPS अधिनियम 1985 की धारा 71 के अन्तर्गत सरकार को नशीली दवाओं के आदी लोगो की पहचान, इलाज और पुनर्वास केन्द्र की स्थापना का अधिकार है। नोडल एजेन्सी के रूप मे सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, शराब और मादक द्रव्य दुरूपयोग निवारण स्कीम मे अन्तर्गत लोगों के लिए स्वैच्छिक संगठनो द्वारा चलाए जा रहे एकीकृत पुनर्वास केन्द्र को सहायता प्रदान कर रहा है।

भारत ने संयुक्त राष्ट्र द्वारा बुलाए गए तीन सम्मेलनों - नारकोटिक्स ड्रग सम्मेलन - 1961 ई., साइकोट्रापिक्स पदार्थ 1971 ई., के सम्मेलन तथा नारकोटिक्स ड्रग्स एवं साइकोट्रापिक्स पदार्थ 1988 पर हस्ताक्षर कर इस पर वचनबद्धता दोहरायी है।

फैक्ट - हमारे देश मे 237 आइसोमर्स और उनके स्टेरोकेमिकल उत्पादों को प्रतिबंधित सूची में रखा गया है। यदि औषधि कार्य के अलावा इन्हे कोई रखता है तो वह दंड का भागी होगा।

नशीले पदार्थो के सेवन से बढ़ते दुष्प्रभावों को देखते हुए सरकार द्वारा अनेक कानूनी कार्यवाही की जा रही है । हाल ही में केन्द्र सरकार द्वारा जारी दिशा- निर्देशो में नशीले पदार्थो के सेवन से होने वाले दुष्प्रभाव वाले चित्र को पहले की अपेक्षा बड़े रूप मे दिखाना अनिवार्य किया गया है तथा लोगों मे इसके प्रति जागरूकता फैलाने के लिए महत्वपूर्ण निर्धारित दिन के वर्ष के अन्दर दिवस के रूप मे दिवस मानाय जाता है। जैसे 04 फरवरी 2020 को वर्ल्ड कैंसर डे और 01 मई 2020 को वर्ल्ड नो-टोबैको डे मनाया गया है।

प्रदूषण - एक गम्भीर समस्या

सुश्री नैन्सी पोरवाल
पुत्री श्री मदन मोहन गुप्ता,
उच्च श्रेणी लिपिक, आगरा

बदलते जीवन के साथ हमारे वातावरण में कई तरह के परिवर्तन आते हैं । हमारी ही वजह से आज हमारा वातावरण प्रदूषित है और होता जा रहा है जिसकी वजह से हमें कई तरह की बीमारियों का सामना करना पड़ रहा है । विज्ञान के इस युग में मानव को जहाँ कुछ वरदान मिले हैं तो वहीं कुछ अभिशाप भी मिले हैं । प्रदूषण एक ऐसा अभिशाप है जो विज्ञान की कोख से जन्मा है और जिसे सहने के लिए अधिकाँश जनता मजबूर है । प्रदूषण की समस्या आज मानव समाज के समक्ष खड़ी सबसे गम्भीर समस्याओं में से एक है । पिछले कुछ दशकों में प्रदूषण जिस तेजी से बढ़ा है उसने भविष्य में जीवन के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लगाना शुरू कर दिया है । विश्व के समस्त देश प्रदूषण से होने वाली हानियों का लेकर चिन्तित हैं ।

आज से कुछ दशक पहले तक कोई प्रदूषण की समस्या को गम्भीरता से नहीं लेता था । प्रकृति से संसाधनों को प्राप्त करना मानव के लिए सामान्य बात थी । उस समय बहुत कम लोग ही सोच सके थे कि प्राकृति संसाधनों को अंधाधुंध उपयोग हानि भी पहुँचा सकता है । हम जितना भी प्रकृति से लेते, प्रकृति उतने संसाधन दोबारा पैदा कर देती । ऐसा लगता था जैसे प्रकृति का संसाधनों का भण्डार असीमित है । लेकिन जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ने लगी, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन बढ़ता गया । वनों को काटा गया, अयस्कों के लिए जमीनों को खोदा गया । मशीनों ने इस काम में और तेजी ला दी । औद्योगिक क्रांति का प्रभाव लोगों को पर्यावरण पर दिखने लगा । जंगल खत्म होने लगे और उनकी जगह बड़ी-बड़ी इमारतें, कारखाने, गोदाम आदि नज़र आने लगे । इससे प्रदूषण की समस्या धीरे-धीरे विकराल रूप धारण करने लगी ।

आज प्रदूषण की समस्या इतनी विकराल हो गई है कि मनुष्य के लिए साँस लेना मुश्किल हो गया है । गाड़ियों और कारखानों से निकलने वाला धुआँ हवा में जहर घोल रहा है । इसकी वजह से तेजी से वायु प्रदूषण बढ़ रहा है । देश की राजधानी दिल्ली में तो प्रदूषण ने खतरे का निशान पार कर लिया है । कारखानों से निकलने वाला कचरा नदियों और नालों में बहा दिया जाता है । इससे होने वाले जन प्रदूषण के कारण लोगों के लिए अब पीने लायक पानी मिलना मुश्किल हो गया है । खेत में खाद के रूप में प्रयोग होने वाले रासायनिक खादों ने खेत को बंजर बनाना शुरू कर दिया है । इससे भूमि प्रदूषण की समस्या गम्भीर होती जा रही है । इस तरह प्रदूषण तो किसी न किसी रूप में निरन्तर बढ़ ही रहा है परन्तु प्रदूषण को रोकने के लिए जिन वनों की जरूरत वो दिन-ब-दिन कम होते जा रहे हैं ।

प्रदूषण के कारण धरती का तापमान बढ़ रहा है । ओज़ोन परत में कई छेद हो चुके हैं । समुद्रों और नदियों में जीव-जन्तु मर रहे हैं । कई देशों में जलवायु परिवर्तन हो रहे हैं । कभी बेमौसम बरसात हो रही है तो कभी बिल्कुल वर्षा नहीं हा रही है । इससे खेती को बहुत नुकसान हो रहा है । ध्रुवों की बर्फ पिघल रही है जिससे समुद्र किनारे स्थित देशें और शहरों के डूबने का खतरा बढ़ गया है । हिमायल के ग्लेशियर पिघल रह हैं जिससे गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्र जैसी नदियों के लुप्त होने की संभावना गढ़ गई है ।

ऐसे गम्भीर समय में यह आवश्यक हो गया है कि संसार के सारे देश मिलकर प्रदूषण की इस समस्या पर लगाम लगाएं । जब उद्योगों को लगाने से मानव जीवन ही खतरे में पड़ रहा है तो उसके लिए प्रकृति को नष्ट करके जीवन को आरामदायक बनाने के लिए ऐसे उद्योगों को लगाकर क्या होगा । अभी हाल में (12 दिसम्बर 2015) को संसार के 196 देश प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए फ्रांस की राजधानी पेरिस में इकट्ठे हुए थे । सबने मिलकर यह निश्चय किया है कि धरती के तापमान को दो डिग्री से अधिक बढ़ने नहीं दिया जाएगा । देर से ही सही पर यह इस दिशा में बढ़ाया गया सही कदम है । यदि इस पर वास्तव में अमल किया गया तो पेरिस अधिवेशन मनुष्य जाति के लिए एक आशा की स्वर्णिम किरण साबित होगी । उम्मीद है कि हम पर्यावरण की रक्षा के लिए सही कदम उठाएंगे और आने वाली पीढ़ी को प्रदूषण के दुष्परिणामों से बचाएँगे ।

जलाशयों में प्रदूषित जल का शुद्धिकरण होना चाहिए । कोयला तथा पेट्रोलियम पदार्थों का प्रयोग घटाकर सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, बायो गैस, सीएनजी, एलपीजी, जलविद्युत जैसे वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों का आधिकारिक दोहन करना चाहिए । हमें जंगलों को कटने से बचाना चाहिए तथा रिहायशी क्षेत्रों में नए पेड़ लगाने चाहिए । इन सभी उपायों को अपनाने से वायु प्रदूषण और जल प्रदूषण को कम करने में काफी मदद मिलेगी ।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि प्रदूषण को कम करने का एकमात्र उपाय सामाजिक जागरूकता है । प्रचार माध्यमों के द्वारा इस सम्बन्ध में लोगों तक संदेश पहुँचाने की आवश्यकता है । सामूहिक प्रयास से ही प्रदूषण की विश्वव्यापी समस्या को नियंत्रित किया जा सकता है ।

"आओ मिलकर कसम ये खाएँ, प्रदूषण को हम दूर भगाएँ"

प्राकृतिक आपदा जलप्रलय (बाढ़) - कारण एवं दुष्परिणाम

सुश्री लता कुमारी
पुत्री श्री प्रकाश चन्द
सहायक, आगरा

जल ही जीवन है, यह उक्ति पूर्णतया सत्य है । परन्तु जिस प्रकार किसी भी वस्तु की अति या आवश्यकता से अधिक की प्राप्ति हानिकारक है उसी प्रकार जल की अधिकता अर्थात् बाढ़ भी प्रकृति का प्रकोप बनकर आती है । इसका प्राकृतिक कारण तो वर्षा का आवश्यकता से अधिक होना ही माना जाता है पर कभी-कभी किसी नदी या बाँध आदि में दरारें पड़ने या टूटने के कारण तीव्र जल बहाव से प्रलय का सा दृश्य उत्पन्न हो जाता है ।

हमारे देश में प्राय: जुलाई-अगस्त का महीना वर्षा ऋतु का है जब तपती हुई धरती के ज्वलन को छमछमाती हुई बूँदे ठण्डक प्रदान करती हैं लेकिन वर्षा की अति लोगों के लिए आपदा बन जाती है ।

बाढ़ एक प्राकृतिक आपदा है जो अधिकतर वर्षा के मौसम में ही आती है और कभी-कभी अप्राकृतिक घटनाओं के कारण भी आ जाती है । किसी भी एक स्थान पर आवश्यकता से अधिक जलभराव होने पर उसे बाढ़ कहा जाता है क्योंकि जब यह तेज़ गति से जल प्रवाह के रूप में आती है तब यह सभी घरों, इमारतों, मनुष्यों, पशुओं आदि सभी को बहाकर ले जाती है और नष्ट भ्रष्ट कर देती है । बाढ़ का रूप इतना विकराल होता है कि जहाँ भी बाढ़ आती है वहाँ त्राहि-त्राहि मच जाती है जिसके कारण लोगों को अपना घर और गाँव छोड़कर जाना पड़ता है ।

बाढ़, प्राकृतिक और अप्राकृतिक, दोनों ही कारणों से आ सकती है लेकिन प्राकृतिक बाढ़ को रोकना जहाँ हमारे लिए मुमकिन नहीं वहीं अप्राकृतिक कारणों से उत्पन्न बाढ़ को रोकने के लिए हमें प्रयास करने चाहिए ।

प्राकृतिक बाढ़ - अत्यधिक वर्षा होना या बादलों का फटना प्राकृतिक कारणों से उत्पन्न बाढ़ के प्रमुख कारण हैं ।

क- <u>अधिक वर्षा होना</u>: कभी-कभी एक ही स्थान पर आवश्यकता से अधिक मात्रा में लगातार वर्षा होने के कारण चारों ओर जलभराव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है और कुछ ही समय में यह जलभराव बाढ़ का रूप ले लेता है।

ख- <u>बादल का फटना</u> : बादल फटने का कारण कुछ ही घण्टों में अधिक मात्रा में जल प्रवाह होता है जिस कारण तेज गति से जल बहता है और बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो जाती है । हमारे देश में उत्तराखण्ड में लगभग हर वर्ष बादल फटने के कारण बाढ़ आती है ।

अप्राकृतिक बाढ़ - इसके लिए मानव द्वारा किए जाने वाले कार्य उत्तररदायी हैं -

क- <u>बाँध का टूटना</u> : जल संग्रह के लिए मानव द्वारा बड़े-बड़े बाँध बनाए जाते हैं लेकिन खराब निर्माण के कारण बाँध मजबूती नहीं रह जाता जिसके कारण कुछ ही सालों बाद कई लाखों लीटर पानी से भरे बाँध टूट जाते हैं और बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो जाती है ।

ख- <u>ग्लोबल वार्मिंग</u> : मानव द्वारा अंधाधुंध पेड़ो की कटाई किए जाने और प्रदूषण की मात्रा अत्यधिक बढ़ जाने की वजह से ग्लोबल वार्मिंग की स्थिति उत्पन्न हुई है । इसकी वजह से पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है और वातावरण में भी बदलाव आ रहा है । इन सब परिवर्तनों की वजह से कहीं बहुत अधिक मात्रा में सूखा पड़ रहा है तो कहीं पर बहुत अधिक मात्रा में वर्षा हो जाती है । पृथ्वी का तापमान बढ़ने के कारण ग्लेशियरों पर पर बर्फ के रूप में जमा लाखों लीटर पानी पिघलने लगता है जिसके कारण बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो जाती है ।

<u>बाढ़ के दुष्परिणाम</u>

बाढ़ बहुत दिनों तक तबाही मचाती है । बाढ़ के आने पर भी नुकसान होता है और बाढ़ का पानी सूख जाने पर भी नुकसान होता है ।

1- जनहानि : बाढ़ आने के कारण एक क्षेत्र विशेष पूरा पानी में डूब जाता है जिसके कारण वहाँ रहने वाले कई लोगों और पशुओं की मृत्यु हो जाती है ।

2- धन हानि : बाढ़ के प्रभाव के कारण चारों तरफ जल ही जल होता है जिससे वहां पर होने वाले उद्योग-धंधे ठप हो जाते हैं साथ ही लोगों द्वारा जिंदगी भर की पूंजी लगाकर बनाए गए मकान और इमारतें भी ढह जाती हैं ।

3- फसल का खराब होना - बाढ़ आने के कारण खेत-खलिहान डूब जाते हैं और किसानों द्वारा बोई गई पूरी फसल खराब हो जाती है जिसके कारण खाने-पीने की वस्तुओं के दाम बढ़ जाते हैं। किसानों की फसल नष्ट होने के कारण वे और भी गरीब हो जाते हैं ।

मध्यांचल, आगरा एवं अधीनस्थ उपांचल कार्यालयों में आयोजित राजभाषायी गतिविधियाँ

त्रैमासिक हिंदी बैठक

आगरा कार्यालय

दिनांक 15.05.2020 एवं दिनांक 17.08.2020 को क्रमश: प्रथम एवं द्वितीय त्रैमासिक हिंदी बैठक ।

भोपाल कार्यालय

दिनांक 22.06.2020 एवं दिनांक 07.09.2020 को क्रमश: प्रथम एवं द्वितीय त्रैमासिक हिंदी बैठक ।

प्रयागराज कार्यालय

दिनांक 15.05.2020 एवं दिनांक 25.08.2020 को क्रमश: प्रथम एवं द्वितीय त्रैमासिक हिंदी बैठक ।

देहरादून कार्यालय

दिनांक 29.06.2020 एवं दिनांक 28.08.2020 को क्रमश: प्रथम एवं द्वितीय त्रैमासिक हिंदी बैठक ।

रायपुर कार्यालय

दिनांक 20.05.2020 एवं दिनांक 13.08.2020 को क्रमश: प्रथम एवं द्वितीय त्रैमासिक हिंदी बैठक ।

त्रैमासिक हिंदी कार्यशाला

आगरा कार्यालय

दिनांक 15.05.2020 एवं दिनांक 09.09.2020 को क्रमश: प्रथम एवं द्वितीय त्रैमासिक हिंदी कार्यशाला ।

भोपाल कार्यालय

दिनांक 24.06.2020 एवं दिनांक 09.09.2020 को क्रमश: प्रथम एवं द्वितीय त्रैमासिक हिंदी कार्यशाला ।

प्रयागराज कार्यालय

दिनांक 15.05.2020 एवं दिनांक 14.09.2020 को क्रमश: प्रथम एवं द्वितीय त्रैमासिक हिंदी कार्यशाला ।

देहरादून कार्यालय

दिनांक 15.05.2020 एवं दिनांक 09.09.2020 को क्रमश: प्रथम एवं द्वितीय त्रैमासिक हिंदी कार्यशाला ।

रायपुर कार्यालय

दिनांक 12.06.2020 एवं दिनांक 15.09.2020 को क्रमश: प्रथम एवं द्वितीय त्रैमासिक हिंदी कार्यशाला ।

16.07.2020 डा.ए.पी.सिंह, उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, डा.एस.के.दीक्षित, विस्फोटक नियंत्रक एवं श्रीमती श्रावणी गांगुली, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, आगरा ने ऑनलाइन आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, आगरा की 77वीं छमाही बैठक में भाग लिया ।

23.07.2020 श्री डी.वी.सिंह, उप-विस्फोटक नियंत्रक, देहरादून ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, देहरादून द्वारा आयोजित ऑनलाइन छमाही बैठक में भाग लिया ।

25.08.2020 लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी, देहरादून द्वारा ''प्रशासनिक शब्दावली के सरलीकरण'' विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया जिसमें प्रोफेसर अवनीश कुमार, अध्यक्ष, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, दिल्ली, श्री राजेश कपूर, सहायक निदेशक तथा देहरादून कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया ।

29.09.2020 डा.ए.पी.सिंह, उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, डा.एस.के.दीक्षित, विस्फोटक नियंत्रक एवं श्रीमती श्रावणी गांगुली, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, आगरा ने ऑनलाइन आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, आगरा की 78वीं छमाही बैठक में भाग लिया ।

मध्यांचल, आगरा एवं अधीनस्थ उपांचल कार्यालयों में हिंदी दिवस / सप्ताह / पखवाड़ा का आयोजन

<u>कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, मध्यांचल, आगरा</u>

दिनांक 09.09.2020 से 23.09.2020 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया । दिनांक 09.09.2020 को संगठन के 122वें स्थापना दिवस के अवसर पर कार्यालय प्रमुख डा. ए.पी.सिंह, उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक की अध्यक्षता में वर्ष 2020 - 2021 के हिंदी पखवाड़ा उदघाटन समारोह एवं द्वितीय कार्यशाला का आयोजन किया गया । ऑनलाइन आयोजित उक्त कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीमती रेनू जौहरी, प्रधान आयकर आयुक्त (प्रथम), आगरा, विशिष्ट अतिथि श्री अजय मलिक, उप-निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तर क्षेत्र - 2), गाजियाबाद एवं कार्यशाला में वक्तव्य देने हेतु आमंत्रित डा.आर.एस.तिवारी, भूतपूर्व सहायक निदेशक, आयकर कार्यालय, आगरा के अतिरिक्त मध्यांचल के अधीनस्थ चारों उप-अंचल कार्यालयों के अधिकारी एवं कर्मचारी भी शामिल हुए ।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के कार्यालय ज्ञापन दिनांक 31.07.2020 के अनुपालन में कार्यालय द्वारा 10 सूक्तियों के पोस्टर बनवाकर हिंदी पखवाड़ा के दौरान कार्यालय में लगवाए गए । कार्यालय के आगंतुक कक्ष में लगे टीवी स्क्रीन पर इन सभी सूक्तियों का डिजीटल डिस्प्ले भी किया गया है एवं प्रतिदिन कार्यालय की कार्य अवधि के दौरान डिजीटली इनका डिस्प्ले किया जाता है ।

दिनांक 14.09.2020 को हिंदी दिवस कार्यक्रम आयोजन के दौरान श्री अमित शाह, माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार द्वारा राष्ट्र के नाम दिए गए सन्देश को पढ़ा गया । डा.एस.के.दीक्षित, विस्फोटक नियंत्रक एवं राजभाषा अधिकारी द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर सभी को शुभकामनाएं दी गईं । पखवाड़ा आयोजन के अवसर पर पोस्टर/स्लोगन, हिंदी सुलेख, हिंदी निबंध, हिंदी काव्यपाठ एवं चित्र देखकर कहानी लेखन आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । कोविड 19 के मद्देनज़र मंत्रालय / मुख्यालय द्वारा जारी निर्देशों का अनुपालन करते हुए सामूहिक रूप से होने वाले कार्यक्रमों को ऑनलाइन आयोजित किया गया ।

दिनांक 23.09.2020 को हिन्दी पखवाड़ा का समापन किया गया । राजभाषा अधिकारी, डा.एस.के.दीक्षित, विस्फोटक नियंत्रक द्वारा ऑनलाइन पखवाड़ा समापन कार्यक्रम का संचालन किया गया एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता प्रतिभागियों के नामों की घोषणा की गई । भारत सरकार द्वारा लागू प्रोत्साहन योजना के अन्तर्गत वर्ष 2019 - 2020 में मूल रूप से हिंदी में कार्य करने वाले कर्मचारियों को भी पुरस्कृत करने की घोषणा की गई ।

श्री ए.के.मेहता, विस्फोटक नियंत्रक द्वारा दिए गए धन्यवाद ज्ञापन के साथ हिंदी पखवाड़ा का समापन हुआ ।

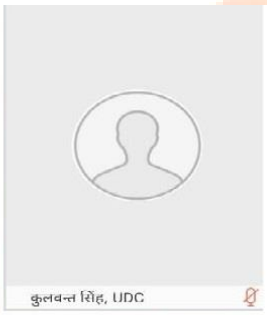

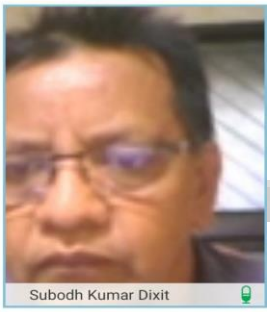

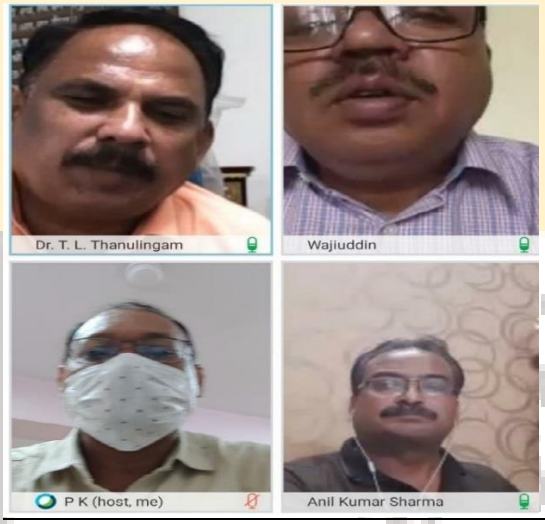

कार्यालय उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, भोपाल

कार्यालय उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, भोपाल में दिनांक 09.09.2020 से 14.09.2020 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया । हिंदी सप्ताह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें सभी कर्मचारियों ने सहभागिता की । पोस्टर प्रतियोगिता के अन्तर्गत बनाए गए पोस्टरों को कार्यालय के सभी कक्षों की दीवारों पर प्रदर्शित किया गया ।

दिनांक 14.09.2020 को हिंदी दिवस का आयोजन किया गया एवं हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित किए जाने के साथ ही हिंदी सप्ताह का समापन हुआ ।

कार्यालय उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, प्रयागराज

दिनांक 04.09.2020 से 18.09.2020 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया । इस दौरान हिंदी टिप्पण, हिंदी टंकण, हिंदी पोस्टर एवं हिंदी निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । इस अवसर पर कार्यालय के पुस्तकालय के लिए हिंदी पुस्तकें भी क्रय की गईं ।

हिंदी पखवाड़े के दौरान दिनांक 09.09.2020 को कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा द्वारा मध्यांचल के समस्त कार्यालयों के लिए समेकित रूप से आयोजित कार्यशाला में कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। इस अवसर पर कार्यालय प्रमुख डा. टी.एल.थानुलिंगम, उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक एवं डा.(श्रीमती) आर.आर.गुप्ता, विस्फोटक नियंत्रक ने अपने-अपने विचार प्रकट किए ।

दिनांक 14.09.2020 को हिंदी दिवस का आयोजन किया गया । इस दौरान वर्ष 2020 - 2021 के वार्षिक कार्यक्रम, राजभाषा नियम 1976, राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अनुपालन, राजभाषा हिंदी का महत्व आदि विषयों पर अधिकारियों द्वारा व्याख्यान दिया गया ।

दिनांक 18.09.2020 को पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के पुरस्कारों की घोषणा के साथ हिंदी पखवाड़ा का समापन हुआ ।

कार्यालय विस्फोटक नियंत्रक, देहरादून

कार्यालय विस्फोटक नियंत्रक, देहरादून में दिनांक 01.09.2020 से 14.09.2020 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया । डा.बी.सिंह, विस्फोटक नियंत्रक (कार्यालय प्रमुख) द्वारा माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन करके पखवाड़ा का शुभारम्भ किया गया । पखवाड़े के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों / प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । दिनांक 14.09.2020 को हिंदी दिवस के अवसर पर डा. बी.सिंह, विस्फोटक नियंत्रक द्वारा श्री राजीव गौबा, मंत्रीमंडल सचिव, भारत सरकार का सन्देश कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के समक्ष पढ़ा गया एवं सभी को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया

गया । पखवाड़े के दौरान क्रय की गई हिंदी पुस्तकें कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के समक्ष प्रदर्शित की गईं एवं पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं के लिए पुरस्कार की घोषणा के साथ दिनांक 14.09.2020 को हिंदी पखवाड़े का समापन किया गया ।

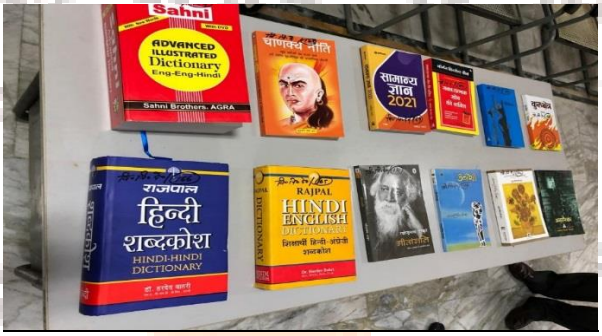

कार्यालय विस्फोटक नियंत्रक, रायपुर

कार्यालय विस्फोटक नियंत्रक, रायपुर में दिनांक 09.09.2020 से 15.09.2020 तक हिंदी सप्ताह मनाया गया । इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया जिसमें अधिकारियों / कर्मचारियों द्वारा बढ़-चढ़कर भाग लिया गया । दिनांक 14.09.2020 को हिंदी दिवस के अवसर पर श्री अमित शाह, माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार द्वारा राष्ट्र के नाम दिए गए सन्देश को पढ़ा गया । दिनांक 15.09.2020 को वर्ष 2020 - 2021 की द्वितीय त्रैमासिक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । कोविड 19 के दृष्टिगत किसी अतिथि वक्ता को आमंत्रित नहीं किया गया । कार्यालय प्रमुख श्री आशेन्द्र सिंह, विस्फोटक नियंत्रक द्वारा दैनिक बोलचाल में प्रयोग किए जाने वाले शब्दों एवं वाक्यों का सरकारी कामकाज में प्रयोग करके राजभाषा के विकास में सहयोग देने के सम्बन्ध में बताया गया । दिनांक 15.09.2020 को हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को किए गए पुरस्कार वितरण के साथ हिंदी सप्ताह का समापन किया गया ।

मध्यांचल आगरा एवं अधीनस्थ उपांचल कार्यालयों में आयोजित विविध गतिविधियाँ

08 एवं 09.04.2020 कार्यालय उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, भोपाल के अधिकारियों ने संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा के साथ लॉकडाउन के समय कार्यालय के महत्वपूर्ण कार्यों के निस्तारण के सम्बन्ध में चर्चा की ।

13.05.2020 कार्यालय उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, भोपाल के अधिकारियों ने श्रीमती सुमीता डाबरा, संयुक्त सचिव, डीपीआईआईटी, नई दिल्ली के साथ मेडिकल ऑक्सीजन आपूर्ति के सम्बन्ध में आयेजित ऑनलाइन बैठक में भाग लिया एवं मध्य प्रदेश राज्य की स्थिति से अवगत कराया ।

13 एवं 22.05.2020 कार्यालय उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, भोपाल द्वारा मेडिकल ऑक्सीजन आपूर्तिकर्ताओं एवं ऑक्सीजन सिलिण्डरों के भरण एवं भण्डारण अनुज्ञप्तिधारकों के साथ बैठक का आयोजन किया गया ।

14.05.2020 श्रीमान संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, मध्यांचल, आगरा द्वारा वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक आयोजित की गई जिसमें प्ररूप ई एवं एफ के अनुज्ञप्तिधारकों तथा एग्मा के अधिकारियों एवं ड्रग कन्टोलर के साथ राज्य स्वास्थ्य नोडल अधिकारी के साथ चर्चा की गई । बैठक में कार्यालय के नोडल अधिकारी श्री आर.के.मण्डलोई, उप विस्फोटक नियंत्रक एवं डा. टी.एल.थानुलिंगम, उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक तथा डा.(श्रीमती) आर.आर.गुप्ता, विस्फोटक नियंत्रक ने भी भाग लिया ।

01.06.2020 डा.टी.एल.थानुलिंगम, उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, प्रयागराज द्वारा कार्यालय परिसर में वृक्षारोपण किया गया ।

09.06.2020 डा.टी.एल.थानुलिंगम, उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, प्रयागराज द्वारा कार्यालय परिसर को सीपीडब्ल्यूडी के माध्यम से सेनेटाइज़ करवाया गया ।

09.06.2020 "रिटेल आउटलेट्स में दुर्घटना" विषय पर कार्यालय उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, कोचीन द्वारा आयोजित वेबीनार में पेसो, प्रयागराज के अधिकारियों, ओएमसी के अधिकारियों तथा स्टेकहोल्डर्स ने भाग लिया ।

11.06.2020 मै० एल.जी.पॉलीमर, विजाग के परिसर में हुई दुर्घटना एवं स्टाइरीन के सुरक्षित भंडारण के संबंध में श्रीमान संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, मध्यांचल, आगरा द्वारा आयोजित वेबिनार में पेसो, प्रयागराज के समस्त अधिकारियों ने भाग लिया ।

12.06.2020 एम.ए.एच परिसरों के सुरक्षा उपायों के विषय में श्रीमान संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, मध्यांचल, आगरा द्वारा आयोजित वेबिनार में पेसो, प्रयागराज के समस्त अधिकारियों ने भाग लिया ।

26.06.2020 डा.ए.पी.सिंह, उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा ने डीपीआईआईटी द्वारा Statutory safety provisions, initiatives and sensitization of licensees in the wake of recent accidents विषय पर आयोजित ऑनलाइन बैठक में भाग लिया ।

29.06.2020 कार्यालय विस्फोटक नियंत्रक, देहरादून में त्रैमासिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें कोरोना वायरस (कोविड-19) को रोकने के लिए एहतियाती उपायों जैसे- सेनेटाइज़ करना, सामाजिक दूरी बनाते हुए कामकाज करना, मास्क लगाना आदि पर चर्चा की गई । संगोष्ठी में कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया ।

17-20.07.2020 कार्यालय उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, भोपाल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने Document Management Software (DMS) विषय पर आयोजित ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया ।

21.07.2020 डा.ए.पी.सिंह, उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा ने श्रीमान संयुक्त सचिव, डीपीआईआईटी द्वारा आयोजित ऑनलाइन बैठक में भाग लिया ।

31.07.2020 डा.ए.पी.सिंह, उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा ने श्रीमान संयुक्त सचिव, डीपीआईआईटी द्वारा आयोजित ऑनलाइन बैठक में भाग लिया ।

04.08.2020 देहरादून कार्यालय के अधिकारियों ने ''सेफ्टी आस्पेक्ट इन सीएनजी'' विषय पर कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, उत्तरी अंचल, फरीदाबाद द्वारा आयोजित वेबिनार में भाग लिया ।

06.08.2020 आगरा कार्यालय द्वारा ई एण्ड एफ अनुज्ञप्तिधारियों के साथ अस्पतालों में आक्सीजन की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करने हेतु ऑनलाइन बैठक आयोजित की गई जिसमें स्टेट नोडल अधिकारी (एमएचआरएफडब्ल्यू) एवं ड्रग कन्ट्रोलर उत्तर प्रदेश ने भाग लिया ।

12.08.2020 देहरादून कार्यालय के अधिकारियों ने ''एसएमपीवी नियम एवं सुरक्षित भण्डारण व रखरखाव'' विषय पर कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, पूर्वी अंचल, कोलकाता द्वारा आयोजित वेबिनार में भाग लिया ।

13.08.2020 डा.ए.पी.सिंह, उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा ने श्रीमान संयुक्त सचिव, डीपीआईआईटी द्वारा आयोजित ऑनलाइन बैठक में भाग लिया ।

14.08.2020 मै. इण्डियन ऑयल कारपोरेशन लिमिटेड, आगरा द्वारा ''पेट्रोलियम सर्विस स्टेशनों में सुरक्षा उपाय एवं नई सुविधाएं'' विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया जिसमें आईओसीएल के अधिकारियों के अतिरिक्त मध्यांचल, आगरा एवं इसके अधीनस्थ उपांचल कार्यालयों के सभी अधिकारियों सहित लगभग 200 लोगों ने भाग लिया ।

15.08.2020 स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर पेसो, आगरा एवं अधीनस्थ उपांचल कार्यालयों में ध्वजारोहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया एवं सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने कार्यक्रम में भाग लिया ।

19.08.2020 श्रीमान मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, नागपुर की अध्यक्षता में आगरा कार्यालय द्वारा ''Safety Measures In Petroleum and Petrochemical Industries With Focus On Refineries, Petrochemical Plants, Pipelines, Depots and Fuel Installations'' विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया ।

19.08.2020 पेट्रोलियम उद्योग में वैश्विक सर्वोत्कृष्ट सुरक्षा प्रणाली पर ऑनलाइन अन्तर्राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया जिसका आयोजन एवं संचालन डा.ए.पी.सिंह, उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा द्वारा किया गया । इसमें उपांचल कार्यालयों के अधिकारियों सहित भारत, लंदन, यूरोप से कुल 573 अधिकारियों / व्यक्तियों ने भाग लिया । कार्यक्रम का उदघाटन श्री एम.के.झाला, मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, नागपुर द्वारा किया गया ।

29.08.2020 डा.ए.पी.सिंह, उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा द्वारा वीडियो कॉलिकियम का आयोजन किया गया जिसमें संगठन के मुख्य विस्फोटक नियंत्रक के पद से सेवानिवृत्त अधिकारियों एवं संगठन के विभिन्न कार्यालयों से सेवानिवृत्त अधिकारियों ने भाग लिया । कार्यक्रम का उदघाटन श्री एम.के.झाला, मुख्य विस्फोटक नियंत्रक नागपुर द्वारा किया गया ।

31.08.2020 डा.ए.पी.सिंह, उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा की अध्यक्षता में ''एमएच अधिष्ठापनों के सुरक्षा ऑडिट'' विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया जिसमें मध्यांचल, आगरा एवं अधीनस्थ उपांचल कार्यालयों के सभी अधिकारियों ने भाग लिया ।

01.09.2020 डा. ए.पी.सिंह उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा ने श्रीमान संयुक्त सचिव, डीपीआईआईटी के साथ ऑनलाईन आयोजित बैठक में भाग लिया।

01.09.2020 कार्यालय विस्फोटक नियंत्रक, देहरादून के अधिकारियों ने ''इम्पोर्ट, हैण्डलिंग एवं स्टोरेज'' विषय पर कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, दक्षिणी अंचल, चेन्नई द्वारा आयोजित वेबिनार में भाग लिया ।

02.09.2020 कार्यालय विस्फोटक नियंत्रक, देहरादून ने उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, गुवाहाटी द्वारा आयोजित वेबिनार में भाग लिया ।

03.09.2020 कार्यालय उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, प्रयागराज द्वारा ''एलपीजी बॉटलिंग प्लान्ट लेआउट एवं सेफ्टी कन्सीडरेशन'' विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया । मध्यांचल, आगरा एवं अधीनस्थ उपांचल कार्यालयों के अधिकारियों ने उक्त वेबिनार में भाग लिया ।

02 एवं 14.09.2020 मध्य प्रदेश में निर्बाध रूप से मेडीकल ऑक्सीजन की आपूर्ति के सम्बन्ध में भोपाल कार्यालय द्वारा मेडीकल ऑक्सीजन आपूर्तिकर्ताओं के साथ ऑनलाइन बैठक आयोजित की गई ।

07.09.2020 डा. ए.पी.सिंह, उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा द्वारा मध्यांचल के सभी कार्यालयों के साथ ऑनलाइन प्रशासनिक बैठक आयोजित की जिसमें मध्यांचल, आगरा एवं चारों अधीनस्थ उपांचल कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

12 एवं 14.09.2020 श्री वजीउददीन, उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, भोपाल ने निदेशक, स्वास्थ्य विभाग, मध्य प्रदेश द्वारा मध्य प्रदेश में निर्बाध रूप से मेडीकल ऑक्सीजन की आपूर्ति के सम्बन्ध में आयोजित ऑनलाइन बैठक में भाग लिया ।

25.09.2020 डा. ए.पी.सिंह उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा ने श्रीमान सचिव, डीपीआईआईटी के साथ आयोजित ऑनलाईन बैठक में भाग लिया।

पेसो के 122वें स्थापना दिवस (09.09.2020) समारोह के उपलक्ष्य में दिनांक 17.08.2020 से 09.09.2020 तक मध्यांचल, आगरा एवं उसके अधीनस्थ उपांचल कार्यालयों द्वारा आयोजित कार्यक्रम

कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा

"पेट्रोलियम उद्योग में वैश्विक सर्वोत्कृष्ट सुरक्षा प्रणाली" विषय पर अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन

दिनांक 19.08.2020 को डॉ ए.पी.सिंह, उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक (प्रभारी), पेसो आगरा द्वारा अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन एवं संचालन किया गया। श्री एम.के.झाला, मुख्य विस्फोटक नियंत्रक (प्रभारी), पेसो, नागपुर द्वारा उदघाटन भाषण दिया गया। उक्त वेबिनार में समस्त भारत तथा लंदन (यू.के.) एवं यूरोप से कुल 573 अधिकारियों / व्यक्तियों ने भाग लिया ।

इस अवसर पर श्री केविन हेज़, निदेशक-सेफ्टी एवं आपरेशन रिस्क, फ्यूचर मोबिलिटी सॉल्यूशन्स, बीपी फ्यूल्स, लंदन, श्री अरविंद कुमार, ईडी एवं रिफाइनरी प्रमुख, मथुरा रिफाइनरी, श्री अजय त्रिपाठी, ईडी (पीसी-ओ एंड एम), गेल (इंडिया) लिमिटेड, पाता, श्री एम.के.आज़ाद, जीएम-एचएसई, मथुरा रिफाइनरी एवं श्री बुयुकमोरोवा टुंक, सेफ्टी सिस्टम मैनेजर मिडस्ट्रीम, एचएसइसई लीड, बीपी फ्यूल्स, यूरोप ने विभिन्न विषयों पर प्रस्तुतियाँ दीं।

श्री वजीउद्दीन, उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, पेसो भोपाल द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ वेबिनार का समापन हुआ ।

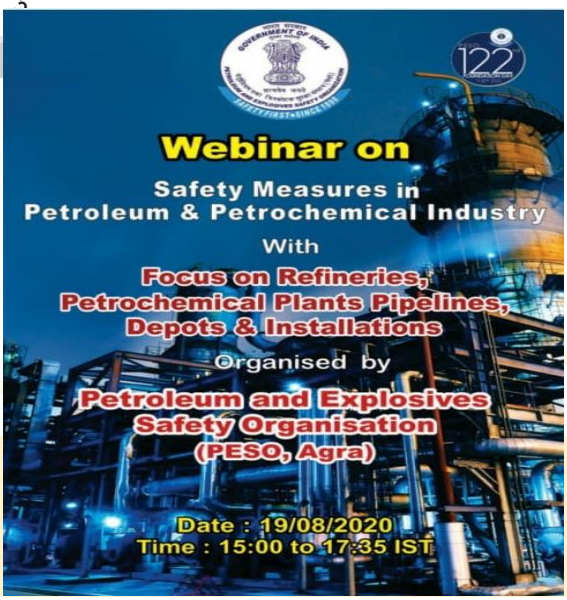

पेसो, आगरा के कार्यालय प्रमुख डॉ.ए.पी.सिंह, उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, द्वारा दिनांक 29.08.2020 को एक वीडियो कलिकियम (Video Collaquium) का आयोजन एवं कार्यक्रम का संचालन किया गया जिसमें पूर्व में आगरा कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों जो मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक के पद से संगठन के विभिन्न कार्यालयों से सेवानिवृत्त हुए है, को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का उदघाटन श्री एम.के.झाला, मुख्य विस्फोटक नियंत्रक (संगठन प्रमुख), पेसो, नागपुर द्वारा किया गया ।

इस कार्यक्रम के आयोजन एवं संचालन में अपने पूर्ववर्ती अत्यंत वरिष्ठ अधिकारियों एवं वरिष्ठतम 91 वर्षीय ह्यूस्टन अमेरिका में बसे श्री अम्लेंदु गांगुली जैसे विभूतियों के न केवल संस्मरण एवम् अनुभव से अवगत होने का अवसर मिला बल्कि ऑयल एवं गैस इंडस्ट्रीज के वरिष्ठतम अधिकारियों (सीएमडी) के भी अनुभव प्राप्त हुए। मुख्य विस्फोटक नियंत्रक श्री एम.के. झाला के द्वारा उद्घाटित इस कार्यक्रम में सोलर इंडस्ट्रीज लिमिटेड के सीएमडी श्री सत्यनारायण नुवाल ने विस्फोटक उद्योग की ओर से सभी लोगों का स्वागत किया गया ।

मुख्य विस्फोटक नियंत्रक के पद से सेवानिवृत्त श्री आर.एच. भालेकर, श्री अजय निगम, श्री पी.सी.श्रीवास्तव, डॉ.सुदर्शन कमल एवं श्री एन. टी.शाहू, संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक के पद से सेवानिवृत्त श्री ए.एन. विश्वास, श्री एल.के.श्रीवास्तव, श्री डी. विजयन, श्री एस.सी.माइती, श्री कैलाश कुमार, श्री आर.सी.कॉल एवं श्री के.एल.सिलावट तथा उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक के पद से सेवानिवृत्त श्री एस.पी.पुरवार, श्री ए.वी.सुब्बाराव, श्री जयेंद्र त्रिपाठी एवं डॉ एम.एम.बेग ने कार्यक्रम में अपना अनुभव साझा किया ।

इस अवसर पर आयल एवं गैस इंडस्ट्री के सेवानिवृत्त चेयरमैन आइओसीएल के श्री एम.ए.पठान, बीपीसीएल के श्री आर.के.सिंह एवं गेल (इंडिया) लिमिटेड के श्री बी.सी. त्रिपाठी को और पेसो के सभी अधिकारियों को उनके योगदान को एकनॉलेज करते हुए स्मृति - चिन्ह के द्वारा सम्मानित किया गया।

श्री वजीउद्दीन, उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, भोपाल द्वारा दिए गए धन्यवाद ज्ञापन और मध्यांचल के उपांचल कार्यालयों के अध्यक्षों ने सम्मान देते हुए कार्यक्रम का समापन किया ।

सेवानिवृत्त अधिकारियों की उपस्थिति एवं इस मंच के माध्यम से वर्षों बाद अपने पुराने सहकर्मियों को देखने, सुनने एवं उनसे बातें कर पाने के कारण खुशी और भावुकता की अभिव्यक्ति ने कार्यक्रम को सार्थकता प्रदान की ।

सुरक्षा सर्वोपरि

09 सितम्बर 2020

पेट्रोलियम एवं विस्फोटक सुरक्षा संगठन के 122वें स्थापना दिवस समारोह का आयोजन

"एम.ए.एच अधिष्ठापनों का सेफ्टी ऑडिट" विषय पर वेबिनार - दिनांक 31 अगस्त 2020

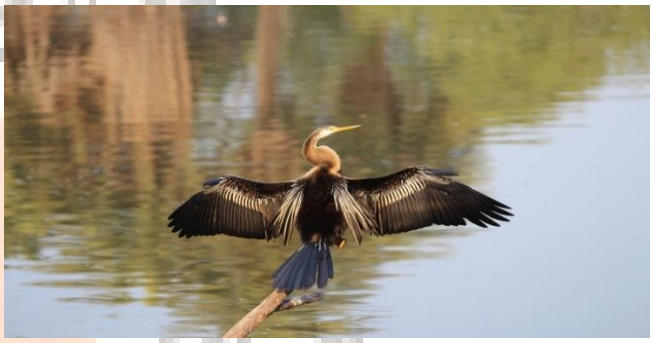

स्मारक बचाएं ..... पर्यावरण बचाएं ..... जीवन बचाएं

सुरक्षा सर्वोपरि

दिनांक 31.08.2020 को

"मेजर एक्सिडेन्ट हैज़ार्ड अधिष्ठापनों का सेफ्टी ऑडिट" विषय पर वेबीनार

द्वारा

पेट्रोलियम एवं विस्फोटक सुरक्षा संगठन, मध्यांचल, आगरा

पर्यावरण के प्रदूषण को कम करने हेतु दिनांक 31.08.2020 को डा. ए.पी.सिंह, उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, कार्यालय प्रमुख, आगरा द्वारा पेसो, मध्यांचल के प्रांगण में वृक्षारोपण किया गया । इस अवसर पर कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारी भी मौजूद रहे ।

<u>कार्यालय उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, भोपाल</u>

पेसो संगठन के 122वें स्थापना दिवस (09**.09.2020**) **के उपलक्ष्य में दिनांक 04.09.20220 को "SETT SYSTEM & FUTURE ROAD MAP" विषय पर आयोजित ऑनलाइन वेबिनार**

सर्वप्रथम श्री वजी-उद-दीन, उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, भोपाल द्वारा कार्यक्रम का स्वागत उदबोधन किया गया । कार्यक्रम का संचालन श्री तेजवीर सिंह, उप विस्फोटक नियंत्रक, भोपाल द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ तथा उदघाटन भाषण मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, नागपुर के प्रतिनिधि के रूप मे श्री व्ही.के.मिश्रा, उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, नागपुर द्वारा किया गया । विषयक कार्यक्रम पर मुख्य आधार व्याख्यान डॉ ए.पी.सिंह, उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक (कार्यालयाध्यक्ष) कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा द्वारा दिया गया जिसमें उन्होने विषय की महत्ता पर चर्चा की ।

श्री तेजवीर सिंह,उप विस्फोटक नियंत्रक,द्वारा **SETT** पर पावर पॉइंट प्रस्तुति दी गई तथा मुख्य अतिथि श्री एस.के.ढोके, वरिष्ठ तकनीकी निदेशक, एन.आई.सी, नागपुर द्वारा विषयक कार्यक्रम पर व्याख्यान देकर ज्ञानवर्धक प्रस्तुति दी गई । अंत में उपस्थित मान्यवरों को श्री राजेन्द्र रावत, विस्फोटक नियंत्रक द्वारा धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम का समापन किया गया ।

<u>कार्यालय उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, प्रयागराज</u>

1. दिनांक 17.08.2020 को कार्यालय प्रमुख डॉ. टी.एल.थानुलिंगम, उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक की अध्यक्षता में पेसो के 122वें स्थापना दिवस समारोह का उद्घाटन किया गया । उक्त कार्यक्रम में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया तथा विभाग एवं इस कार्यालय के इतिहास के बारे में कार्यालय प्रमुख एवं अन्य अधिकारियों ने व्याख्यान दिए।

2- दिनांक 18.08.2020 को केंद्रीय सदन के प्रांगण (भू-तल) में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें डॉ. टी.एल.थानुलिंगम, उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, डॉ.(श्रीमती) आर.आर.गुप्ता, विस्फोटक नियंत्रक व श्री राहुल कुमार मंडलोई, उप विस्फोटक नियंत्रक ने एक-एक वृक्ष लगाए तथा सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे ।

3- दिनांक 19.08.2020 को कार्यालय परिसर में आटोमेटिक हैंड सेनेटाइजर डिस्पेंसर मशीन लगवाया गया एवं डॉ. टी.एल. थानुलिंगम, उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक द्वारा उसका उदघाटन किया गया ।

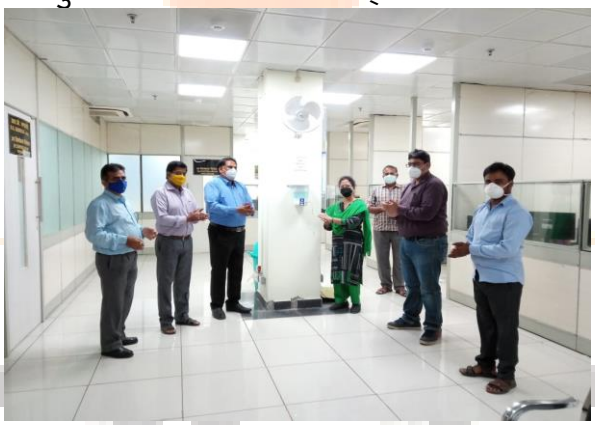

1- स्वच्छ भारत मिशन एवं कोरोना से सुरक्षा हेतु दिनांक 19.08.2020 को कार्यालय परिसर की साफ-सफाई की गयी एवं साथ ही सीपीडब्ल्यू कार्यालय द्वारा पूरे कार्यालय परिसर को सेनेटाइज किया गया।

2- दिनांक 19.08.2020 को डॉ. टी.एल.थानुलिंगम, उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक द्वारा समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को आयूष मंत्रालय द्वारा निर्मित क्योरा **"आयूष क्वाथ" (आयुर्वेद काढ़ा)** वितरित किया गया।

6. दिनांक 21.08.2020 को डॉ. टी.एल.थानुलिंगम, उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक द्वारा मेसर्स आईओसीएल, एलपीजी बाटलिंग प्लांट, गोरखपुर में वृक्षारोपण किया गया।

7. दिनांक 22.08.2020 को डॉ. टी.एल.थानुलिंगम, उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक के द्वारा दो मिनट का "फायर सेफ्टी" विषय पर वीडियो बनाया गया।

8. पेसो के 122वें स्थापना दिवस समारोह के उपलक्ष्य में अन्य कार्यालयों द्वारा आयोजित वेबीनार्स में भी कार्यालय के सभी अधिकारियों ने भाग लिया ।

9. दिनांक 27.08.2020 को इस कार्यालय द्वारा **"Commitment to the Environment & Safety"** विषय पर आनलाइन वेबीनार का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। इस वेबीनार के दौरान सभी अधिकारियों ने उपरोक्त विषय पर अपने-अपने विचार व्यक्त किए।

10. दिनांक 03.09.2020 को कार्यालय द्वारा "एलपीजी बाटलिंग प्लांट लेआउट एण्ड सेफ्टी कॉन्सीडेरेशन" विषय पर वेबीनार का आयोजन किया गया। उक्त वेबीनार में संगठन प्रमुख श्री एम.के.झाला, मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, मध्यांचल प्रमुख डॉ.ए.पी.सिंह, उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक (कार्यालय प्रमुख) डॉ.टी.एल.थानुलिंगम, उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक ने भाग लिया। डॉ.(श्रीमती) आर.आर.गुप्ता, विस्फोटक नियंत्रक ने **"Statutory Provisions for LPG Bottling Plant under SMPV(U) Rules, 2016 & GCR, 2016"** विषय पर पॉवर प्वाइंट प्रजेंटेशन दिया। अन्य वक्ताओं में **श्री जी.के. मेशराम**, जीएम (एलपीजी इंजीनियरिंग), आईओसीएल, लखनऊ ने **"LPG Bottling Plant - Layout"** विषय पर तथा **श्री नशरूल कमर**, मैनेजर, एचएसएसई, बीपीसीएल, एलपीजी प्लांट, नैनी द्वारा "**Electrical Safety in LPG Plant"** विषय पर व्याख्यान दिया गया। कार्यक्रम का संचालन **श्री आर.के.मंडलोई, उप-विस्फोटक नियंत्रक** ने किया । इस वेबिनार में संगठन के अन्य कार्यालयों के अधिकारियों सहित लगभग 80 लोगों ने भाग लिया।

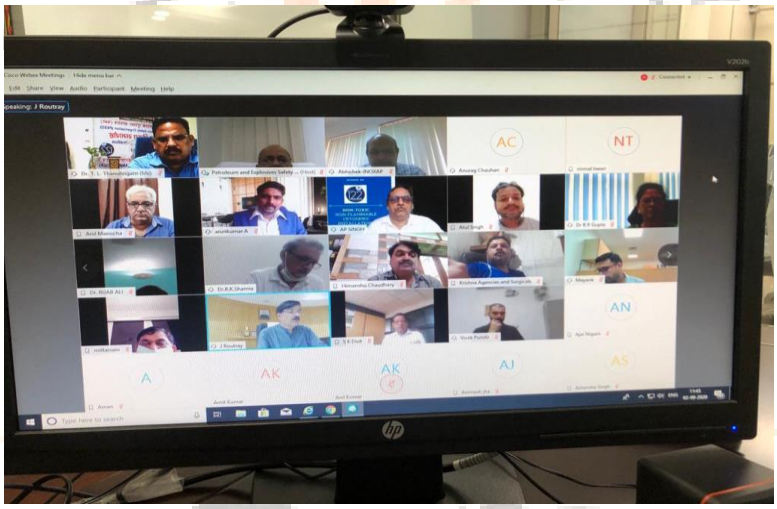

<u>कार्यालय विस्फोटक नियंत्रक, देहरादून</u>

दिनांक 29.08.2020 को डा. बी.सिंह, विस्फोटक नियंत्रक एवं श्री डी.वी.सिंह, उप-विस्फोटक नियंत्रक द्वारा मै० गोल्ड प्लस इण्डस्ट्रीज लिमिटेड, रुड़की, जिला हरिद्वार के परिसर में वृक्षारोपण किया गया ।

दिनांक 02.09.2020 को ''**नॉन टॉक्सिक नॉन फ्लेमेबल क्रायोजेनिक इन्स्टॉलेशन**'' विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया । डा. बीरेन्द्र सिंह, विस्फोटक नियंत्रक द्वारा पावर पोएन्ट प्रेजेन्टेशन के माध्यम से तकनीकी विषय पर व्याख्यान दिया तथा इण्डस्ट्री के अन्य दो वक्ताओं ने भी अपने अपने व्याख्यान प्रस्तुत किए । श्री डी.वी.सिंह, उप-विस्फोटक नियंत्रक द्वारा किए गए धन्यवाद ज्ञापन के साथ वेबीनार का समापन हुआ ।

<u>कार्यालय विस्फोटक नियंत्रक, रायपुर</u>

पेसो संगठन के 122वें स्थापना दिवस (09.**09.2020**) **के उपलक्ष्य में**
दिनांक 04.09.20220 को आयोजित ऑनलाइन वेबिनार

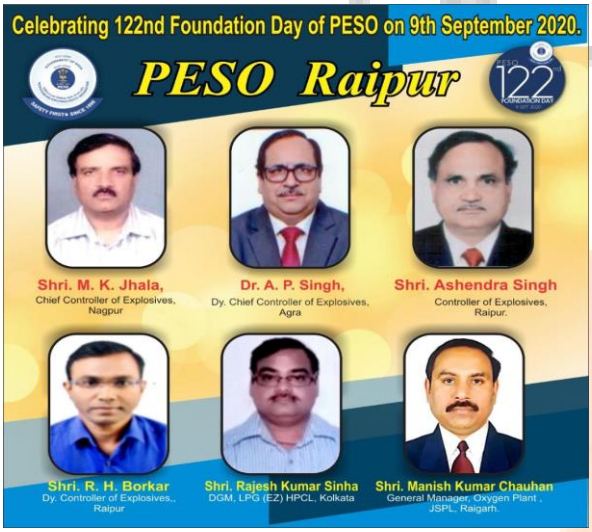

फाउन्डेशन डे के उपलक्ष्य में संगठन के विभिन्न कार्यालयों द्वारा आयोजित कार्यक्रमों के अन्तर्गत दिनांक 04.09.2020 को रायपुर कार्यालय द्वारा वेबिनार का आयोजन किया गया । स्वागत उदबोधन श्री आशेन्द्र सिंह, विस्फोटक नियंत्रक, रायपुर द्वारा की-नोट एड्रेस डा. ए.पी.सिंह, उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक (कार्यालय प्रमुख) आगरा द्वारा एवं उदघाटन भाषण श्री एम.के.झाला, मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, नागपुर द्वारा दिया गया । अतिथि वक्ताओं के रूप में श्री राजेश कुमार सिन्हा, डीजीएम, एलपीजी(ईजेड), एचपीसीएल, कोलकाता एवं श्री मनीष कुमार चौहान, जीएम, ऑक्सीजन प्लान्ट, जेएसपीएल, रायगढ़ उपस्थित हुए । उनके द्वारा क्रमश: ''एलपीजी बॉटलिंग प्लान्ट में सुरक्षा अपेक्षाएँ'' एवं ''अविषैले अज्वलनशील गैस फिलिंग प्लान्ट्स में सुरक्षा अपेक्षाएँ'' विषय पर प्रस्तुति दी गई। श्री आशेन्द्र सिंह, विस्फोटक नियंत्रक, रायपुर द्वारा गैस सिलिण्डर इण्डस्ट्री में सुरक्षा - एक अवलोकन विषय पर प्रस्तुति दी । श्री आर.एच.बोरकर द्वारा दिए गए धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ ।